अकादमी एक दशक

प्रस्तुतकर्त्ता डॉ हरीश
निदेशक

आमुख

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) अपना एक जीवन-स्तर पूर्ण कर चुकी है। प्रांत के लब्धप्रतिष्ठित एवं नव प्रतिभावान् साहित्यकारों का इस स्नेह सहयोग एवं सजीव साहचर्य जितने उत्साह से अबतक मिला है भविष्य में उससे भी अधिक उत्साह और योग इस संस्था को सतत् मिलता रहेगा यह मेरी आशामयी कामना है।

प्रदेश के साहित्यकारों का यह संस्थान पूर्ण स्वायत्त स्वरूप प्राप्त कर इसके लिए प्रयत्न हो रहा है कि सरकार को तथ्य प्रेरित किया जाय और एक विधेयक के रूप में इसकी स्वायत्तता को प्रतिष्ठा मिले।

अकादमी के प्रकाशनों पुरस्कारों साहित्यिक एवं वैचारिक गोष्ठियों एवं पत्रिकाओं के विविधांगी कार्यक्रमों ने राजस्थान व देश के अन्य प्रान्तों में साहित्यिक बंधुत्व को भी बढ़ावा दिया है उसका विकास साहित्यकारों के विश्वास व सहयोग के साथ सदैव अग्रसर रहे इस शुभाशंसा सहित 'अकादमी एक दशक' की यह पुस्तिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हरिभाऊ उपाध्याय
अध्यक्ष
राजस्थान साहित्य, अकादमी (संगम) उदयपुर

दो शब्द

राज्य सरकार न राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम) की स्थापना २८ जनवरी सन् १९५८ मे की। राज्य के मुख्यमत्री माननीय श्री मोहनलालजी सुखाडिया के सद्प्रयत्नो ने इस अकादमी को जन्म दिया है। अकादमी के प्रथम सस्थापक-अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर थे, जिनके भगीरथ प्रयत्ना से राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपनी प्रगति-यात्रा की है। अकादमी के वतमान अध्यक्ष, मनीषी श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नेतत्व म अकादमी ने इस प्रगति यात्रा के १० वष पूर किए हैं। यह दशाब्दि समारोह उसी प्रगति का प्रतीक है। अपने स्थापना दिवस स लेकर आज तक अकादमी ने अपनी जिन प्रमुख प्रवत्तियो का विकास विस्तार किया है उस समस्त प्रगति का सक्षिप्त इतिहास इस छोटी-सी पुस्तिका—'अकादमी एक दशक' के छह खडा म प्रस्तुत किया गया है।

हमे विश्वास है 'अकादमी एक दशक', आपकी साहित्य अकादमी मे उद्भव विकास एव काय प्रवत्तियाँ सम्बन्धी सभी जिज्ञासाओ का यथाशक्य शमन करेगा और आपको इसके कार्यो स परितोष होगा। इसी आशा के साथ 'अकादमी एक दशक' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

२५ फरवरी, १९६८
साहित्य अकादमी (सगम)
कार्यालय
उदयपुर (राज)

विनीत
डॉ० हरीश
निदेशक

संकल्प का जन्म

श्री मोहनलाल वागवार्ना के निवास पर उदयपुर मे राजस्थान के मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया को भोज दिया गया। श्री सुखाड़ियाजी के मित्र और साथी श्री जनार्दनराय नागर (तब एम. एल. ए. काग्रेस) भी उनके साथ निमत्रित थे। बातो ही बातो मे श्री नागर ने श्री सुखाड़ियाजी से कहा, "आप मुख्यमत्री हो गये, आपने सब को कुछ न कुछ दिया है, मुझे आपने कुछ भी तो नही दिया।" श्री सुखाडिया ने हठात् मुस्करा कर कहा, "क्यो ? विद्यापीठ की एट है न।" श्री नागर ने मुलक कर उत्तर दिया, "विद्यापीठ की एट तो पहले से ही है, पर क्या वह मुझे दी जाती है ? नही। मुझे व्यक्तिगत आपने भला क्या दिया है ?" श्री सुखाडियाजी ने कहा "अच्छा, तो क्या चाहते हो ?" श्री नागर ने कहा, "माँग लूँ ? देखिये देने वाले आप, राजस्थान के युवक मुख्यमत्री और मागने वाला मैं, आपका एक विनम्र मित्र अत. आपके और मेरे योग्य आपको देना होगा। स्वीकार है ?" श्री सुखाडियाजी पुनः मुस्कराये, "हाँ मॉगलो, जनुभाई।" श्री नागर ने तनिक हँसकर कहा, "निश्चिन्त हो जाइये, सुखाडियाजी आपके राज्य और उसके वैभव मे हिस्सा नही मांगूंगा। ऐसा कुछ मांगूंगा, जो आप राजस्थान को दिल खोलकर दे सके।" श्री सुखाड़िया ने स्वीकार मे गर्दन हिलाई। श्री नागर ने मांगा "राजस्थान के साहित्यकारो के लिये ऐसी अकादमी मुझे दें जिससे राजस्थान की अस्मिता और चेतना से पूर्ण सृजन-प्रतिभा व्यक्त और विकसित हो सके। ऐसी अकादमी, जो भारत भर मे एक और अनूठी हो।" श्री सुखाडियाजी ने मुस्कराकर कहा, "ऐसी ही अकादमी हो।" मानो तथास्तु। श्री नागर ने शान्त गभीर स्वर मे कहा, १७ वर्षो से मैं इस प्रयास मे लगा हूँ कि राजस्थान के साहित्यकारो का सगठित परिवार हो। कई मुख्यमन्त्रियो के द्वार यह पुकार लेकर गया हूँ। आपने आज मेरी यह पुकार सुनी। अब आदेश दीजिये कि राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम), उदयपुर की योजना बनाकर मैं आपकी सरकार की स्वीकृति के लिये प्रस्तुत करूँ।"

यों यह राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम), उदयपुर के सकल्प का जन्म हुआ।

(श्री जनार्दनराय नागर की लेखनी से)

प्रथम खण्ड

स्थापन-सगठन एव प्रवृत्तियाँ

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), उदयपुर

महामना बापू ने एक बार कहा था कि "राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाने मे चित्तौड और भगवद्गीता ने प्रेरणा शक्ति के रूप म याग दिया है।" गाधीजी के इस कथ्य मे राजस्थान मुखर हुआ है। राजस्थान जो वीर प्रसविनी वसुंधरा के सार्वभौमिक म्वत्व से अभिमण्डित है, उसका इतिहास स्याही से नही लिखा जा सका, रक्त से लिखा गया है। यहाँ की सुबहे मलयजी और शामे गजनमी है। यहाँ के मौन सन्नाटे और चुप्पिया जाने कितने लोम-हर्षक इतिहास अपने मे समेटे हैं। अत्यन्त मुक्तता से चलने वाली हवाओं, मरुस्थली ऊर्मसिक्ता के तूफानो, डाँग-डूँगरो के फौलादी रास्तो और कटीली तथा उबडखाबडी झीलो के सौदर्य के मादव मे जा डूबे है, वे जानते है कि राजस्थान का भारत की सस्कृति के निर्माण मे कितना सशक्त हाथ रहा है। यहाँ का एक-एक कण जीवन के शाश्वत सत्यो का उदघाटक है। बात का धनी, और आन के लिए मत्यु मे मुस्करा कर टक्कर खेलने वाला राजस्थान गौरव और जीवट की गाँठ बाँध कर चला है। शौय, कला और सौदय की त्रिवेणी! नर ऐसे कि जसे नाहर, नारियां ऐसी कि जैस कि आग की कलियाँ। कठोर ऐसा कि वज्रादपि और कोमल ऐसा कि छूलो ता हिया भर आये, आँखें छलछला आएँ। यहाँ की सरस्वती का चित्र निश्चय ही कुछ दूसरा होगा।

विद्वान् कहते हैं कि ज्ञान और सृजन की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती यहीं निवास करती थी। इसकी सृजननिधि अनत है। शताब्दियो से इसकी ऊर्जा, गौरव, स्वाभिमान और माधुर्य के आख्यान हवा की भांति देहरी-देहरी पर विचरण करते हैं। अत ऐसे राजस्थान मे युगो से हम इस अभाव की अनुभूति कर रहे थे, कि ऐसे नैसर्गिक और जीवटपूर्ण धरती के साहित्य को उजागर करने के लिए हम कुछ कर पाते, इसके साहित्यिक गौरव को अधिकाधिक मुखर एवं रूपायित कर पाते।

सन् १९५८ की २८ जनवरी की संध्या। लोगों ने विस्मय एवं उत्साह से श्रद्धेय डा० कैलाशनाथ काटजू के प्रवचन में एक संदेश की अनुगूँज सुनी—

"जिस तरह मीरां के गीत देश-व्यापी हुए, उसी प्रकार आपकी अकादमी की सुगन्ध जन-जन तक पहुँचने में समर्थ हो,"…… …… भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के अजेय योद्धा, कुशल प्रशासक एवं विधिवेत्ता डा० कैलाशनाथ काटजू (अब स्वर्गीय) की इस प्रेरणामयी वाणी के साथ २८ जनवरी सन् १९५८ ई० के दिन राजस्थान में राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) की स्थापना हुई। और सांस्कृतिक और साहित्यिक पुनर्निर्माण एवं विकास के महत् संकल्प ने अपना अस्तित्व ग्रहण किया। ……… चिरंतन सुखों की स्मृतियों के दर्शन हम साहित्यकारों के आँसुओं में करते हैं और उसकी कराहट में हम वर्तमान की समर्थ प्रसव-पीडाओं को समाप्त करते है। उसकी अपलक पलकों में आने वाले चैतन्य और कल्याण और सन्तोष के युगों का हमें आभास हो जाता है। महियसी पृथ्वी का क्रान्तदर्शी पत्र, मधुमती भूमिका का धनी साहित्यकार, सभ्यता के जीवन-सौंदर्य और उदार प्रेम का सदैव सन्देशवाहक रहा है और 'यावच्चन्द्र दिवाकरो' वह ऐसा ही रहेगा। यदि किसी ने वसुन्धरा पर सुधा को सुलभ किया है, तो वह साहित्यकार ने ही किया है। फिर भले ही वह कवि हो, नाटकार हो, कहानी लेखक, उपन्यासकार या गद्य-लेखक हो। इन्ही स्वस्थ संकल्पों को लेकर साहित्य अकादमी के सदस्यों और परिजनों द्वारा हम ऐसे ही पृथ्वी के अमृत-सन्देश की उपासना में लग जावें।' 'राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रथम अध्यक्ष पं० जनार्दनराय नागर के इस ऊर्जस्वित आह्वान के साथ प्रवृत्तमान, राजस्थान-प्रदेश का यह साहित्यिक प्रतिष्ठान आज अपने एक दशक के गतिमय विगत की मधुरिम स्मृतियों के साथ अपनी अस्मिता और विकासमान प्रगति एवं परम्परा को सगर्व, सहर्ष स्मरण कर राजस्थान के चेतनाशील सर्जकों के सम्मुख उनके योग व सहयोग

से अपना क्षितिज विस्तार कर पाने का सामर्थ्य जुटा रहा है। ऐसे प्रतिष्ठान की प्रतिस्थापना में श्री नागर का यह संदेश अविस्मतव्य कहा जायगा।

इस अवसर पर औपचारिकतावश नहीं, बल्कि कर्तव्य-भावना सहित हम राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया की इस प्रादेशिक साहित्य संगठन के स्थापना की साहसिक पहल व साहित्यानुराग का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण करते हैं जिन्होंने राज्य की तीनों अकादमियों—साहित्य, संगीत और ललित कला को व्यक्तित्व प्रदान करने में अपना विशिष्ट योग दिया है।

राजस्थान की महिमामयी पुण्य-श्लोक धरती के उन सभी दिवंगत सरस्वती पुत्रों को भी यह संस्था सादर स्मरण कर रही है, जिनका सक्रिय सहयोग इसके अभ्युत्थान हेतु प्राप्त हुआ। अकादमी के सभी निर्माणकारी तत्त्वों के प्रति आभार प्रदर्शन कर हम यहाँ उसके आकार प्रकार की बहुमुखी जानकारी आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। सर्वप्रथम हम साहित्य अकादमी के आमुख विधान से ही विषय प्रवेश कर रहे हैं।

राजस्थान साहित्य अकादमी स्थापना तिथि २८ जनवरी सन् १९५८ से सन् १९६२ तक सरकारी स्वरूप में अपना कार्य करती रही। सन् १९६२ के बाद यह राज्य सरकार द्वारा स्वायत्त घोषित करदी गई। स्वायत्त होने के बाद इस संस्था ने अपना जनतांत्रिक स्वरूप ग्रहण कर अपना स्वायत्त विधान पारित किया जो १५ धाराओं में समाविष्ट है। इनका सहज बोध आपको अग्रांकित तथ्यों से हो सकेगा

अकादमी के अधिकार एवं कार्यक्षेत्र

१–राजस्थान में साहित्यधारा में सहकार भावना का उन्नयन।

२–संविधान द्वारा स्वीकृत क्षेत्रीय भाषाओं के अनुवाद-कार्य का प्रोत्साहित एवं व्यवस्थित करना। राजस्थानी भाषा से हिन्दी व अन्य भाषाओं में अनुवाद-कार्य।

३–साहित्यिक संस्थाओं एवं साहित्यिकों की सहायता।

४—श्रेष्ठतम साहित्यिक कृतियो, जिनमे ग्रन्थ-सूचियाँ, शब्द-कोश, ज्ञान-ग्रन्थ एवं मूलभूत शब्दावलियाँ भी सम्मिलित है, का प्रकाशन अथवा तदर्थ साहित्यिक सस्थाओ तथा साहित्यिको को सहायता।

५—राजस्थान मे साहित्यिक परिषदो, उपनिषदो, विचार-गोष्ठियो, साहित्यिक रचना-शिविरो, कवि-सम्मेलनो तथा प्रदर्शनियो का आयोजन।

६—साहित्यकारो की सर्वश्रेष्ठ कृतियो को पुरस्कृत करना एव साहित्यिको को विशेष सम्मान व मान्यता प्रदान करना।

७—साहित्यिक शोध-कर्मिक को शोध-कार्य प्रशिक्षणहेतु प्रवृत करना व साहित्यिक शोध-कार्यो के लिये शोध-वृत्तियाँ प्रदान करना।

८—मानक ग्रन्थो व पत्र-पत्रिकाओ के प्रकाशन को प्रोत्साहन।

९—शोध-खण्ड सहित एक पुस्तकालय की स्थापना।

१०—जन-संस्थानो एवं स्वायत्त निगमो, सरकारी व अर्द्ध-सरकारी सस्थाओ एवं साहित्य-प्रेमियो से दान, अनुदान, सहायता तथा भेट ग्रहण एव प्राप्ति।

११—अकादमी के उद्देश्यो की प्रति-पूर्तिहेतु सभी प्रकार की भू-सम्पत्ति एव भूमि का क्रय, सरक्षण, विक्रय, रहन एव विस्तारण करना, (किन्तु पाँच हजार रुपये से ऊपर की अचल सम्पत्ति के सौदे लिये सरकार की पूर्व स्वीकृति आवश्यक होगी)।

१२—अकादमी के उद्देश्यो के पूर्ति के अनुरूप अन्य कार्यो को गतिमय करना।

मूलभूत सिद्धान्त :

१—विचार एव वाणी की स्वतत्रता।

२—गत्यात्म राष्ट्रीय भावना की जागरूकता।

३—राजनीतिक, साम्प्रदायिक एव दलो से असम्पंक्तता।

अकादमी के अधिकारी

१–अध्यक्ष [सरकार द्वारा मनोनीत]
२–कोषाध्यक्ष [सरस्वती सभा के निर्वाचन द्वारा नियुक्त]
३–निदेशक [सरकार द्वारा नियुक्त]

अकादमी के विभाग

१–सृजनात्मक विभाग
२–शोध एवं अनुसंधान विभाग
३–राजस्थानी भाषा एवं साहित्य विभाग
४–समालोचना एवं सर्वेक्षण विभाग
५–साहित्य सम्बन्धी विभाग।

अकादमी के अधिकृत एवं विधायक घटक

१–सरस्वती सभा
२–सचालिका समिति
३–अर्थ-समिति
४–स्थायी समितियाँ
[क] विधान उप समिति
[ख] प्रकाशन समन्वय समिति
[ग] मधुमती' परामर्शदात्री समिति
[घ] 'नखलिस्तान' एवं उर्दू प्रकाशन परामर्शदात्री समिति
[च] नियुक्ति-वियुक्ति उप समिति

अकादमी का कोष-वर्ग

१–सरकारी अनुदान
२–गृहीत ऋण
३–अकादमी की सम्पत्ति से प्राप्त आय।
४–शुल्क, दान, विशेष सहायता एवं भेंट।

राज्य सरकार का अधिकार क्षेत्र

राज्य सरकार अकादमी का किसी भी भाग की क्रियान्विति व पूर्ति के लिए सम्बोधित कर सकती है।

अकादमी का अधिक्रमण :

(अ) यदि कभी भी राज्य सरकार इस बात से सन्तुष्ट हो जाय कि अकादमी अपने विधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों के परिपालन मे अयोग्य सिद्ध हो रही है, इसका अतिक्रमण हो रहा है। लगातार दोप बढ रहे है एव अधिकारो का दुरुपयोग हो रहा है तो ऐसी सूरत मे सरकार १ वर्ष की अवधि के लिये राज-पत्र मे सूचना प्रसारित कर एक प्रशासक को अकादमी का कार्य एव व्यवस्था सभालने के लिये नियुक्त कर अकादमी को अधिक्रमित कर सकती है। लेकिन अधिक्रमण की यह अवधि एक वर्ष की ही होगी। इस अवधि के समाप्त होने से पूर्व ही सरकार इसका पुनर्गठन करेगी।

(ब) अधिक्रमण-अवधि मे अकादमी के सभी विधायक घटक, विभाग एवं समितियाँ भग समझी जायेगी। अकादमी के सभी सदस्य ऐसी सूरत मे भले वे निर्वाचित हो अथवा मनोनीत अपने पदो व स्थानो से मुक्त माने जायेगे।

विशेष :

१–सरस्वती सभा अपने किसी निर्णय के जो नीति व सिद्धान्त के प्रतिकूल हो, पुनर्समीक्षित व अपरिवर्तित कर सकती है।

२–बशर्ते कि सरकार अनुमोदित करे, अकादमी अपने सेवा-नियमो व उप-नियमो का निर्माण कार्यालयीय कर्मचारियो व अधिकारियो के लिये अकादमी के कार्यालयीय कार्य-सम्पादन-हेतु निर्माण कर सकती है।

३–सरस्वती सभा अपने सदस्यो के तीन-चौथाई बहुमत के प्रस्ताव से सविधान मे सशोधन प्रस्तावित करेगी। तदु-परान्त राज्य सरकार प्रस्ताव का अध्ययन कर सविधान मे संशोधन करेगी।

४–सरस्वती सभा की २३ व २४ अप्रेल ६६ की बैठक मे

सर्व-सम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार तथा राज्य सरकार के आदेश

संख्या एफ, १ (२) शिक्षा । ४ । ६६ से स्वीकृत हुआ परिवर्तन—

(क) धारा १३ ए (७)—अकादमी का निवृत्तमान अध्यक्ष अगले सत्र के लिये सरस्वती सभा का पदेन सदस्य होगा।

(ख) धारा १६ (६)—अकादमी का निवृतमान अध्यक्ष अगले सत्र की सञ्चालिका समिति का पदेन सदस्य होगा।

अकादमी की मुख्य प्रवृत्तियाँ

१ संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, तथा उर्दू भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्यिक एवं मौलिक ग्रन्थों, संकलनों, शोध प्रबन्धों, अनुवादों का प्रकाशन।

२ स्वतन्त्र एवं सहयोगी लेखकों की कृतियों पर प्रकाशन सहायता।

३ पत्र पत्रिकाओं को आर्थिक सहायता।

४ जरूरतमन्द साहित्यकारों को केन्द्रीय, सरक्षित, सक्रिय तथा चिकित्सा आदि विशेष आर्थिक सहायता।

५ सम्बद्ध संस्थाओं को आर्थिक सहायता।

६ हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत एवं उर्दू भाषाओं के साहित्य संवर्द्धन हेतु परिसंवादों, गोष्ठियों, उपनिषदों आदि का आयोजन।

७ अन्तर्प्रान्तीय साहित्य सौहार्द-हेतु साहित्यकार बन्धुत्व भावना के अन्तर्गत अन्तर्प्रान्तीय साहित्यिक शिष्ट मण्डल, यात्रा एवं बन्धुत्व समारोह के आयोजन।

८ देश व प्रदेश के मूर्धन्य साहित्यकारों को मनीषी पद से विभूषित करना।

९. प्रदेश के साहित्यकारो से निर्णीत विधाओं पर पुस्तके आमंत्रित करना व चारो भागाओ की श्रेष्ठ कृतियों को पुरस्कृत करना।

१०. अखिल भारतीय स्तर पर "मीरा-पुरस्कार"।

११. अन्तर्प्रान्तीय साहित्य पुरस्कार यथा "मेघाणी पुरस्कार"।

१२. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ एव विवरणों का प्रकाशन।

१३. विश्वविद्यालवीय स्तर पर छात्र-प्रतियोगिताएँ।

१४. कवि-सम्मेलनो, साहित्यिक प्रदर्शनियों एवं आगन्तुक विशिष्ट साहित्यकारो तथा देश-विदेश के शिष्ट-मण्डलो आदि के स्वागत समारोह।

१५ साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ एव विवरणो का प्रकाशन।

१६ सरकारी, गैर-सरकारी, स्वायत्त संगठनो, सम्बद्ध व असम्बद्ध साहित्यिक सस्थाओ व साहित्यकारो को प्रान्त की साहित्यिक सूचनाएँ व सदर्भ प्रदान करना।

१७. पुस्तकालय, वाचनालय एव सन्दर्भ कक्ष का सचालन।

१८ विभागो द्वारा निर्णीत प्रोजेक्ट कार्यो को गतिमय करना।

राज्य सरकार द्वारा अकादमी के स्वीकृत नियम

(स्वायत्तता पूर्व)

(अ) १) सेमीनार सिम्पोजियम नियम

२) प्रकाशन नियम

३) रिसर्च स्कॉलरशिप नियम

४) मीरॉ पुरस्कार नियम

५) अकादमी पुरस्कार नियम

६) पुरस्कार समिति नियम

७) सस्था सम्बद्धीकरण नियम

८) प्रतियोगिता नियम

९) विवेचन पारिश्रमिक नियम

१०) वृत्ति नियम

वीकृत सशोधित एव परिवर्द्धित नियम (स्वायत्तता के बाद)

(व) स्वायत्त मस्था होने के वाद जो सशोधन अथवा परिवर्द्धन किया गया—

१) सेमीनार नियम ---

२) प्रकाशन सम्बन्धी नियम

३) रिसर्च स्कॉलरशिप नियम

४) पुस्तकालय के नियम

५) वृत्ति नियम

६) साहित्य-वेत्ता (फेलो) नियम

७

अकादमी से सम्बद्ध संस्थायें—रूप और रेखा

अकादमी के जनतान्त्रिक स्वरूप की प्रतीक है, प्रात की एकादश साहित्यक मस्थायें । प्रदेश मे साहित्यिक जागृति, विकास एवं सर्जकीय प्रतिष्ठा के क्षेत्र मे अकादमी से सम्बद्ध संस्थाओ ने स्वतंत्र रूप से व अकादमी के सहयोग से गत दशक मे जो प्रगति की है, उसका श्रेय इन सस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ व सर्जको की कार्य-निष्ठा को है । उपलब्धियाँ गिनाने के लिए नही, वल्कि अकादमी व इन सम्बद्ध सस्थाओ द्वारा आयोजित विद्वद्-परिषदो, उपनिषदो, जयन्तियो, सम्मान-समारोहों एव क्षेत्रीय व प्रादेशिक स्तर पर हुए साहित्यिक कार्यक्रमो के व्यापक प्रभाव को हम नकार नही सकते । आधुनिक काव्य, समसामयिकता एवं आधुनिकता विपयक वीकानेर व अजमेर के उपनिषदो ने प्रात मे नव-वोध के धुँधले क्षितिज को उजालाने मे एव लेखको को चिन्तन की नई-नई दिशाओ मे गतिशील करने हेतु साहित्यिक एवं मैत्री की स्थापना मे असाधारण योग दिया है । अकादमी से सम्बद्ध संस्थाओ के साथ आयोजित उपनिषदो का विस्तृत आकलन एव मूल्याकन अकादमी की मुख-पत्रिका मधुमती (त्रैमासिक) के विशेषांको, साहित्य के मान और मूल्य जैसे ग्रन्थों से सहज आँका जा सकता है । इस संस्थान से सम्बद्ध कई संस्थाये साहित्य एव शोध के क्षेत्र अपने निजी-प्रकाशन व पत्र-पत्रिकाओं का नियमन भी करती है जिन्हे अकादमी यथाशक्य एव यथानीतिनियम सहायता भी देती है । फिर भी यह मानना होगा कि देश-विदेश के वदलते हुए परिवेश मे प्रान्त की जागरूक साहित्यिक सस्थाओ को व अकादमी को अभी और आगे की यात्रा तय करनी है । न केवल साहित्य वल्कि प्रदेश भर की समृद्ध वोलियो के उत्थान के लिये भी अभी

बहुत कुछ होना है। लोक साहित्य, जन साहित्य एवं संवर्द्धन हेतु अकादमी अपने भावी दायित्व की ओर पूर्ण सजग है और रहेगी।

यह अनुदान संस्थाओं के कार्यों को देखते हुए यद्यपि कुछ नहीं है, पर अकादमी का यह केवल सहायता का टोकन मात्र है। हमारा संकल्प है और बड़ी सदाशयतापूर्ण संकल्प है कि आगामी वर्षों में यदि सरकार ने अकादमी के अनुदान में वृद्धि की तो हम अकादमी परिवार से जुड़ी सभी संस्थाओं को और अधिक अनुदान में सक्षम हो सकेंगे। यही नहीं, प्रांत की अनेक संस्थाएं अकादमी से जुड़ना चाहती हैं पर सरकार द्वारा प्रदत्त इस सीमित अनुदान के कारण हम उन संस्थाओं को अकादमी से संबद्ध करने में स्वयं को अशक्य पाते हैं। अकादमी से सम्बद्ध एवं अब तक सहायता प्राप्त संस्थायें अग्रांकित है —

खण्ड दो

अकादमी प्रकाशन

पत्र पत्रिकायें
नीति व सहायता

प्रकाशन

प्रकाशन-नीति

राजस्थान साहित्य अकादमी की स्थापना से लेकर आज तक की प्रकाशन-नीति का आधारभूत स्तंभ यही रहा है कि प्रांत के नूतन-पुरातन, प्रतिष्ठित, प्रगतिवान लेखकों की कृतियाँ अधिक से अधिक रूप में अकादमी के प्रकाशन क्षेत्र में प्रतिष्ठित हों। किसी भी *स्वायत्त संस्थान के लिये उसकी अपनी स्वतंत्र नीति व क्रिया पद्धति* का होना परमावश्यक होता है। साहित्यकारों के वृहत्तर परिवार के सम्मुख स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रकाशन के क्षेत्र में अनेक समस्याओं तथा साधनों के अभाव के कारण इस क्षेत्र की व्यावसायिक प्रतियोगिता का सामना करना अत्यन्त कठिन है। अकादमी अपने सीमित आर्थिक साधनों के कारण यद्यपि उन्हें अपेक्षित राहत नहीं दे पाई है, परन्तु फिर भी राजस्थान के हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत व उर्दू के जिन लेखकों को अकादमी प्रकाशन के दायरे में ला पाई है, आने वाला कल ही उसका सही मूल्यांकन कर पायेगा।

अकादमी की प्रकाशन-नीति गत्यात्मक रही है। इस गत्यात्मकता को हम चार भागों में बाँट सकते हैं

(१) चारों भाषाओं की विविध विधाओं के संकलन।

(२) ग्रंथावलियों का प्रकाशन

(३) शोध प्रबंध

(४) *लेखकों की स्वतंत्र कृतियाँ*

(५) अनुवाद कार्य

अकादमी अब तक ८० ग्रंथ प्रकाशित कर चुकी है। जिनकी सविवरण सूची अग्रांकित है

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), उदयपुर

के

साहित्य प्रकाशन

हिन्दी-साहित्य

क्र० सं०	कृतियाँ	कृतिकार	मूल्य
१	राजस्थानी वेलि-साहित्य (हिन्दी-शोध)	डा० नरेन्द्र भानावत	११-००
२	हाडोती बोली और साहित्य (हिन्दी-शोध)	डा० कन्हैयालाल शर्मा	१५-००
३	राजस्थान के लोकगीत (प्रथम खड-हिंदी-शोध)	डा० स्वर्णलता अग्रवाल	१३-००
४	साहित्य के मान और मूल्य	अकादमी का उपनिषदीय सकलन	४-५०
५	पूर्ण कलश	स्व० डा० रागेराघव	२-७५
६	ऋग्वेद का सामाजिक सास्कृतिक और ऐतिहासिक सार	स्व० विश्वेश्वरनाथ रेऊ	६-००
७	अभिसार निशा	श्री रामगोपालविजयवर्गीय	२-२५
८	मधुरजनी	डा०रामगोपाल शर्मा दिनेश	४-००
९	हरनाथ ग्रन्थावली	प० हरनाथ	२४-००
१०	राजस्थान के नाटककार	स० डा० रामचरण महेन्द्र	५-७५
११	राजस्थान के कहानीकार	सं० डा० रामचरण महेन्द्र एव यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	६-००
१२	राजस्थान के गद्य-काव्यकार	स० डा० रामचरण महेन्द्र	९-००
१३	राजस्थान के कवि (भाग१)	सं० नद चतुर्वेदी	१०-००
१४	राजस्थान के कवि (संस्कृत)	सं० स्व० पुरुषोत्तम शर्मा एव लक्ष्मीनारायण पुरोहित	४-५०

राजस्थानी-साहित्य

१५	जूनाँ जीवता चितराम	श्री मुरलीधर व्यास मोहनलाल पुरोहित	३ ७५
१६	बानगी	श्री भँवरलाल नाहटा	४-५०
१७	राजस्थान के कहानीकार	स० दीनदयाल ओझा	३-७५
१८	राजस्थान के कवि(भाग२)	स० रावत सारस्वत	३-७५
१९	राजस्थानी वचनिकायें	स० आलमशाह खान	४-७५
२०	राजस्थानी एकाकी	स० गणपतचन्द्र भडारी	५-७५
२१	राजस्थानी निबध-सग्रह	स० कु० चन्द्रसिंह	३-७५
२२	शकुतला	अनु० गिरिधरलाल शास्त्री	४-००
२३	गीताजली	अनु०रामनाथ व्यास परिकर	२-५०
२४	रवि ठाकर री वाता	अनु० रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत	३-२५
२५	रवीन्द्र पद्य कथा	अनु० मदनगोपाल शर्मा	१-५०
२६	चित्रागदा	अनु० कु० चन्द्रसिंह	१-००
२७	बसरी	अनु० रावत सारस्वत	१-५०

बाल साहित्य

२८	डा० चम्पक और मचलू	श्री मनोहर वर्मा	२-५०
२९	अद्‌भुत नगर	श्रीमती शान्ता गुप्ता	३-००
३०	हमारे चौपाये	श्री महावीर सिंहल	२-००
३१	नौनिहालो के गीत	डा० हरीश	२-५०
३२	टाबरां री वार्तां राज०	रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत	२-२५

उर्दू-साहित्य

३३	पलक की तलवारें	स० ए० एफ० उस्मानी	३ ००
३४	राजस्थान के मौजूदा उर्दू शायर	स० प्रेमशकर श्रीवास्तव	१४-००

शीघ्र प्रकाश्य कृतियाँ (सन् ६६-६७ में प्रकाशनार्थ स्वीकृत)

१	कांपती निद्र रेखाएँ (कहानी)	श्री धर्मेन्द्र उपाध्याय
२	गीतों का क्षण (काव्य)	श्री अभिमान् शर्मा
३	कविताएं (काव्य)	श्री रमेशकुमार शौक
४	सांझ उतरी (काव्य)	श्री श्याम शाण्डिल्य
५	एक मरण धर्मा और अन्य (काव्य)	श्री ऋतुराज
६	राजस्थानी बात साहित्य (समालोचना)	डा० पूनम दइया
७	राजा राणी (राज०अनुवाद)	अनु० श्री मनमोहन जावलिया

मुद्रणाधीन कृतियाँ

१	मोरपांख (काव्य)	श्री ओंकार पारीक
२	परिप्रेक्ष्य (समीक्षा निबन्ध)	श्री रणजीत
३	मेरी औपन्यासिक मान्यताएँ और डा० रांगेय राघव के उपन्यास (आलोचना)	डा० देवराज उपाध्याय
४	ये बदरंग क्षण (कहानी)	श्री यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"
५	धोरा री धोरी (उपन्यास)	,, श्रीलाल नथमल जोशी
६	लाडेसर (कहानी)	,, बैजनाथ पँवार
७	घूमरे (संकलन)	,, मुरलीधर व्यास ,, मोहनलाल पुरोहित
८	धुँआं उठ रहा है (काव्य)	,, गंगाराम पथिक
९	पाठकों के नोट (समीक्षा-निबन्ध)	,, जगदीश वोरा
१०	वृहत्तर भारत (हिन्दी अनुवाद)	,, अनु० सोमनाथ गुप्ता
११	संस्कृत कथा कुंजम् (कथा संकलन)	श्री गणेशराम शर्मा ,, रामकिशोर व्यास

१२ सवा ग्रथावली
(काव्य सकलन) „ अवतार नारायण वहादुर
१३ राजस्थानी लोकगीत
(द्वितीय खड शोध) डा० स्वणलता अग्रवाल
१४ कोपल वहक गई (कहानी) श्री मनोहर वर्मा

अकादमो की पत्र पत्रिकाएं

राजस्थान साहित्य अकादमी राजस्थान के लेखका की रचनाओ को प्रतिष्ठा दिलाने के काय में सदैव प्रयत्नशील रही है। पत्र पत्रिकाआ के माध्यम स लेखका का सामयिक प्रकाशन व प्रतिष्ठा दिलाने की दृष्टि से अकादमी सन् १९६० से पत्रिका प्रकाशन क क्षेत्र म "मधुमती" का प्रकाशन कर रही है। यह पत्रिका अप्रेल सन् १९६० से १९६५ तक त्रैमासिक रूप मे व अप्रेल १९६५ ई० से मासिक रूप मे नियमित प्रकाशन-पथ पर अग्रसर है। त्रैमासिक "मधुमती" के समस्त अक विविध विधाओ के विशेष महत्त्व की दृष्टि मे पाठका एव समालोचको के लिये सग्रहणीय सिद्ध हुए ह। त्रैमासिक "मधुमती" के सम्पादक परिवार मे डा० मोतीलाल मेनारिया, डा० सोमनाथ गुप्ता, श्री ज्ञान भारिल्ल तथा श्री शान्तिलाल भारद्वाज "राकेश" रहे ह। काव्याक का सम्पादन श्री नन्द चतुर्वेदी, श्री कृष्ण वल्लभ शर्मा, श्री शान्तिलाल भारद्वाज "राकेश" तथा श्री प्रमशकर श्रीवास्तव ने किया। मधुमती त्रैमासिक के सम्पादका के रूप मे इन साहित्यकारो की सेवाये अपना विशिष्ट महत्त्व रखती हैं। त्रमासिक "मधुमती" के कतिपय तथ्य अग्राकित है—

१—"मधुमती" त्रैमासिक के कुल प्रकाशित अक १४ अक १२ जिल्दें
२—'मधुमती' त्रमासिक सयुक्ताक ६
३—'मधुमती" त्रमासिक कुल प्रकाशित पृष्ठ २४४६ [दो हजार चार सौ चौरानव]

४—"मधुमती" त्रैमासिक विशेषांक— आठ

१—रवीन्द्र विशेषांक
२—उपनिषद् अंक भाग १
३— " " २
४— " " ३
५—एकांकी नाटक विशेषांक
६—कहानी विशेषांक
७—काव्यांक,
हिन्दी, राजस्थानी
और उर्दू के ६६
कवियों की रचनाओं
का संकलन
८—कहानी अंक

५—"मधुमती" त्रैमासिक में कुल प्रकाशित रचनाएं :

१— लेख	२३०
२— कविताएँ	१७८
३— कहानियाँ	७३
४— एकाकी एवं नाटक	३१
५— गद्य-गीत	१५
६— स्केच	४
७— संस्मरण	१
	५३३

६— "मधुमती" त्रैमासिक में प्रकाशित राजस्थान के साहित्यकार — ९३.४८ प्रतिशत

७— मधुमती त्रैमासिक में प्रकाशित अन्य प्रांतो के साहित्यकार — ६.५२ "

"मधुमती" के प्रकाशन का द्वितीय चरण अप्रेल १९६५ ई० से नियमित मासिक के रूप में श्री शान्तिलाल भारद्वाज "राकेश" के कुशल सम्पादन से प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका की

बढ़ती हुई लोकप्रियता ने अकादमी को देश व प्रदेश के लेखक परिवार की निकटता, साज य व सहयोग का वैशिष्ट्य प्रदान किया है। अकादमी के पत्रिका-प्रकाशन की यह उज्ज्वल परम्परा अभी जुलाई-अगस्त ६७ मे प्रकाशित अपने "भारतीय बाल साहित्य विवेचन विशेषाक" के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर चर्चित होने का श्रेय इसके अतिथि-सम्पादक श्री मनोहर वर्मा के परिश्रम व सूझ बूझ के बल पर ही प्राप्त कर सकी है। राजस्थान व देश के पत्रिका परिवार मे "मधुमती" का आज अपना स्थान है। मात्र यही कहना पर्याप्त है कि इस पत्रिका ने राजस्थान के लेखकों की प्रतिभाओ को आदर दिया है और अपने कर्तव्य एव दायित्व को निभाने की दिशा मे नियमित प्रकाशन व साम्मासिक की व्यवस्था द्वारा साहसिक पहल की है। साहित्य सेवियो के सम्मुख हम अप्रेल ६५ स नवम्बर ६७ तक के ३० अको (दो सयुक्ताको सहित) का सक्षिप्त तथ्य विवरण प्रस्तुत कर रहे है

अप्रेल ६५ से नवम्बर ६७ तक "मधुमती" के विविध स्तम्भो मे प्रकाशित सामग्री की एक झाँकी।

कुल प्रकाशित सामग्री

० निबन्ध	१२०
० शोध-आलेख	५८
० कवितायें	१८८
० कहानियाँ	११८
० विचार विमर्श परिचर्चा आदि	२६
० वे दिन वे लोग (जीवनियाँ)	१६
० राजस्थली राजस्थानी भाषा म लेख, काव्य आदि	५६

उपर्युक्त सामग्री प्रकाशन अनुपात मे राजस्थान के ५० प्रतिशत से अधिक साहित्यकार प्रकाशित हुये हैं ।

"मधुमती" मासिक में प्रकाशित अप्रैल ६५ से नवम्बर ६७ तक लेखकों को पारिश्रमिक स्वरूप १६,२३५-०० (सोलह हजार दो सौ पैंतीस रुपये) की राशि का भुगतान किया गया है ।

नखलिस्तान

उर्दू भाषा एवं साहित्य जगत् मे विकासमान दिशा मे अकादमी त्रैमासिक मुख–पत्रिका "नखलिस्तान" उर्दू लिपि मे प्रकाशित करती है । "नखलिस्तान" के अबतक ५ अंक प्रकाशित हो चुके है । आगामी अंक "राजस्थान विशेषांक" प्रकाशित होगा तथा उसकी तैयारियाँ कार्यालयस्तर पर की जा रही हैं । अबतक के प्रकाशित समस्त अंको मे देश भर के प्रतिष्ठित और नामवर उर्दू साहित्यकारो का योगदान शामिल रहा है । इसके प्रकाशन मे साहित्य की समस्त विधाओं को सम्मिलित किया गया है तथा राजस्थान की पुरानी पीढी के साहित्यकारो के साथ–साथ प्रांत के नव-बोध के प्रतिभावान साहित्यकारो और उनकी नई कद्रो का भी विशेषत ध्यान रखा गया है । इस पत्रिका के प्रकाशन से प्रांत के उर्दू-जगत मे काफी अच्छा प्रभाव भी पडा है तथा जागरूकता आई है ।

राजस्थान मे कोई उर्दू का प्रेस न होने के कारण तथा अन्य प्रान्तो मे प्रेस-सम्बन्धी कार्यवाही के विषय मे अन्य राज्यो से डिक्लेरेशन प्राप्त करने से लेकर प्रेस मे काम लेने तक जितनी कठिनाईयाँ पेश आई है, उनके कारण यद्यपि प्रकाशन की

नियमितता में गतिरोध उत्पन्न हुआ है, फिर भी अकादमी भविष्य में इस दिशा में सतत है और सिलसिले मे प्रयत्नशील है।
"नखलिस्तान" का संक्षिप्त विवरण अग्राकित है

(क) प्रधान सम्पादक — प्रो० प्रेमशंकर श्रीवास्तव
(ख) सहयोगी सम्पादक — श्री फजलुल मतीन
(ग) प्रबन्ध सम्पादक — ,, आबिद हुसैन अदीब

२— प्रथम अंक अप्रैल एवं जुलाई ६४ (संयुक्तांक रूप मे प्रकाशित

३— अब तक प्रकाशित — ५ अंक
४— कुल प्रकाशित पृष्ठ — ४२१
५— कुल प्रकाशित सामग्री

(क) मजामीन (निबंध आदि)	२७
(ख) नज्में	३६
(ग) गजलें	५१
(घ) कहानियाँ	१२
(च) एकांकी	१
कुल	१२७

'नखलिस्तान' मे प्रकाशित रचनाओ मे राजस्थान और अन्य प्रान्तो के साहित्यकारो का बराबर का अनुपात रहा है। इस सम्बन्ध मे यह नीति विशेषत रही कि राजस्थान के साहित्यकारों को अखिल भारतीय स्तर के ख्याति प्राप्त साहित्यकारो की पंक्ति मे ला खड़ा किया जाए और इस प्रयोग के आधार पर स्पष्ट है कि यह एक अच्छा प्रयत्न रहा है।

"नखलिस्तान के समस्त लेखकों को अबतक पारिश्रमिक स्वरूप १११५)रु० (एक हजार एक सौ पन्द्रह रुपये) की राशि भुगतान की जा चुकी है।

अकादमी के सूचना-पत्रक

राजस्थान साहित्य अकादमी कार्यालय से समय-समय पर सरस्वती सभा, संचालिका समिति, विभागों, महत्त्वपूर्ण

समितियो तथा विशेष समारोहों आदि की उपलब्धियाँ, नीति निर्णयों व कार्यालयीय-कार्य-वर्णन योजनाओं की जानकारी राजस्थान भर के लेखको तक विवरण-पत्रिका विभिन्न विज्ञप्तियो, पत्रदूतो एवं वार्षिक विवरणो के माध्यम से दी जाती रही हैं। यह स्फुट सूचना प्रकाशन-परम्परा लेखक परिवार से अकादमी के निकट सम्पर्क में रह पाने का सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। आर्थिक सीमाओ के कारण इनका नियमित प्रकाशन समयक्रमेण नही हो पाया। अकादमी इस बारे मे सदैव सतर्क व सचेष्ट रही है कि लेखकों तक अकादमी का आह्वान सतत रूप से गतिवान रहे। अब तक अकादमी ने १००० से ऊपर स्फुट सूचना-पत्रक प्रकाशित तथा प्रसारित किये है।

अधिकार शुल्क (रायल्टी)

राजस्थान साहित्य अकादमी अपने निजी प्रकाशनो के लेखकों, संग्रहकर्त्ताओं, अनुवादकों एवं सम्पादकों को पारिश्रमिक स्वरूप नियमानुसार रायल्टी देती है। रायल्टी के नियम अकादमी की स्वायत्ता के पूर्व व पश्चात् समय-समय पर पुनर्निर्धारित होते रहे है।

दिनांक ३० अप्रेल १९६५ को सरस्वती सभा के निर्णय सं० ३३ द्वारा रायल्टी का अग्रांकित निर्णय वर्तमान प्रणाली मे है —

अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों मे मौलिक कृतियो पर प्रथम संस्करण के लिये छपाई गई कुल पुस्तकों का (प्रकाशित-पुस्तक-मूल्य के आधार पर) कुल धनराशि का (छपाई गई कुल पुस्तको का १० प्र० श० पुस्तकों को नियमानुसार सम्मिलित न करते हुए) ५ प्रतिशत अग्रिम पारिश्रमिक के रूप मे लेखक को पुस्तक प्रकाशित होते ही दे दिया जाए और उसके प्रथम संस्करण के बिकने के पश्चात् १० प्रतिशत रायल्टी तथा अन्य संस्करणो पर बिकने के पश्चात् १५ प्रतिशत रायल्टी दी जाए। अनुवादो पर भी ५ प्र० श० के रूप मे अग्रिम दे दिया जाए, इसी नीति व पद्धति के अनुसार।

तथ्य सकेत

अब तक अकादमी १६ पुस्तकों पर अग्रिम रायल्टी के रूप में रु० ७३०२–५४ पैसे (सात हजार तीन सौ दो रुपये चौवन पैसे) अनुग्रहित लेखकों को दे चुकी है।

राजस्थान साहित्य अकादमी का सत्रवार प्रकाशन विवरण

वर्ष	प्रकाशनों की संख्या	मुद्रित पृष्ठ
६१–६२	१४	२०८०
६२–६३	२	६८
६३–६४	३	२५५
६४–६५	२	२२६
६५–६६	६	२३६७
६६–६७	८	१५७४
६७–६८		

प्रकाशन बिक्री

वर्ष	राशि
३१–१२–६२ से पूर्व	५५–६०
१ जनवरी से ३१ मार्च ६३	६–३८
६३–६४	१५१–८५
६४–६५	५६–१३
६५–६६	१५३६–७६
६६–६७	२३३७०–६१
६७–६८	
	२५०८०–४३

प्रकाशन सहायता

राजस्थान साहित्य अकादमी राजस्थान के लेखकों के स्वतंत्र प्रकाशन पर जिन्हें लेखकगण अपने निजी खर्च से प्रकाशित करवाते हैं, उन्हें साधन-सुविधा जुटाने तथा प्रोत्साहन के उद्देश्य से आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस अनुदान की राशि कुल प्रकाशन व्यय का ५० प्रतिशत तक हो सकती है। इस सम्बन्ध में अबतक दिये गये अनुदान का व्योरा इस प्रकार है

क्रम	पुस्तक	लेखक	अनुदान की राशि
हिन्दी			
१	रक्त-दीप	श्री गणपतचन्द भण्डारी	८०० रु०
२.	युग-स्रष्टा प्रेमचन्द	,, परमेश्वर द्विरेफ	५०० रु०
३.	गीतांजलि	अनु० स्व० डॉ० सुधीन्द्र प्रका० भारतेन्दु समिति, कोटा	६०० रु०
४.	क्षमा कीजिये	श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी	२५० रु०
५.	नवरंग	,, रामेश्वर प्रसाद वशिष्ठ	२५० रु०
६.	चूटक्या एव चचउका	,, बुद्धिप्रकाश पारीक	२५० रु०
७.	राजस्थानी साहित्य. एक शताब्दि	,, शान्तिलाल भारद्वाज "राकेश"	२५० रु०
८.	हम सब अमर हैं	श्री पूर्णानन्द मिश्र	२५० रु०
९	उल्टी गंगा	,, मिश्रीमल जैन "तरंगित"	२५० रु०
१०.	मृत्युञ्जय	, ओंकारनाथ दिनकर	२७० रु०
११	वक्र रेखायें	,, धर्मेश शर्मा	३६५ रु०
१२	अमर सुभाष	,, लालचन्द जैन	३२५ रु०
१३.	सप्तकिरण		———
राजस्थानी			
१४.	गाधी शतक	श्री नाथूदान महियारिया	२००० रु०
१५.	सोनो निपजै रेत मे	,, गजानन वर्मा	८०० रु०
१६.	राधा	,, सत्यप्रकाश जोशी	६०० रु०
१७.	रातवासौ	,, नृसिहराज पुरोहित	२५० रु०
१८	मिमझर	राजस्थानी काव्य सकलन	२५० रु०
१९.	शैतान सुजस (विविध)	श्री सवाईसिंह धमोरा	३५० रु०
२०	दीवा कापै क्यू	,, सत्यप्रकाश जोशी	२५० रु०
२१	बारह मासा	,, गजानन वर्मा	२५० रु०
२२.	पन्नाधाय	,, डॉ० आशाचन्द भडारी	१५१ रु०
२३.	झर-झर कथा	श्री करणीदान बारहठ	२०० रु०

२४ मेघमाल श्री सुमेरसिंह शेखावत २५० रु०
२५ गौखे ऊभी गौरड़ी ,, मदनमोहन शर्मा
२६ आर्यासप्तशती ,, गजानन्द महता ५०० रु०
(सस्कृत से अनूदित)
२७ जागती जोत ,, गिरधारीसिंह पडिहार

उर्दू

२८ गुलो-गोहर श्री अहतरामुद्दीन अहमद शागिल ३०० रु०
२९ शामो-सहर स० श्री राजेश कुमार "राज" ३७५ रु०

प्रोजेक्ट सहायता -

अकादमी अपने सीमित सामर्थ्य मे शोध-कार्यो की यथाशक्य सहायता करती रही है। हमारा सकल्प सदाशयतापूर्ण है। इस नाते आज यदि हम प्रोजेक्ट पर बजट की सीमाओ के कारण अधिक व्यय नही कर सकते तो भविष्य मे हम इस ओर अवश्यमेव गतिशील रहगे। फिर भी प्रोजेक्ट की राशि अकादमी अनुदान की सरकार द्वारा वृद्धि पर ही निभर है। आज तक अकादमी ने जिन प्रोजेक्टस पर सहायता दी है वे अग्राकित ह

राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा सबद्ध सस्थाओ को प्रोजेक्ट के लिए दी गई सहायता विवरण

१ पृथ्वीराज रासौ कोश हेतु — साहित्य सस्थान, उदयपुर १५,००० रु० [६२-६३ से ६६ ६७ तक]

२ पाडुलिपियो के केटलागिंग के लिए — राज० शोध सस्थान, जोधपुर को (सस्था सहायता के रूप म)
४००० ००
६३ ६३ में ५०० रु०
६५-६६ मे २००० रु०
६६-६७ म १५०० रु०

३ लोक साहित्य के प्रकाशन के लिए ६६-६७ मे — साहित्य समिति, बिसाऊ ६००-०० (सस्था सहायता के रूप मे)

पत्र-पत्रिकाओं को अधिक अनुदान

प्रदेश में श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन-प्रसारण की दिशा में मूल्यवान सृजन एवं विकास के उद्देश्य से सृजनात्मक एवं शोध सम्बन्धी तथा साहित्यिक पत्रिकाओं को अकादमी आर्थिक सहायता प्रदान करती है। यह हर्ष व गर्व का विषय है कि पत्रिकाओं के सम्पादक एवं संस्थाओं के संचालक अपने सत्प्रयत्नों से सहज की कठिनाइयों एवं अर्थाभाव का सामना करते हुए भी हिन्दी, उर्दू, राजस्थानी व संस्कृत भाषा व साहित्य के अध्येताओं व सर्जकों की नूतन-पुरातन कृतियों का इन पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशन करते आ रहे हैं। अकादमी इन्हें अपनी सीमाओं के अनुसार यथासम्भव सहायता दे रही है।

खण्ड तीन

अकादमी की विचार गोष्ठियाँ

अकादमी की विचार-गोष्ठियाँ दृष्टि और दिशा

सृजन व चिंतन का मेल अन्योन्याश्रित है। अकादमी राज्य की शीर्ष साहित्यिक संस्था होने के नाते इस ओर सदैव पूर्ण सचेष्ट रही है कि जिससे देश प्रदेश की प्राच्यार्वाचीन साहित्यिक विचार-धाराओं, चिन्तन प्रणालियों एवं युग-युगीन धारणाओं पर प्रांत के उदीयमान व प्रतिष्ठित साहित्यकार, साहित्यिक समारोहों के माध्यम से समय-समय पर देश के प्रबुद्ध साहित्य चिन्तकों, कृतिकारों एवं समीक्षकों से मिले-जुले निर्धारित विषयों पर परिचर्चात्मक स्तर पर ज्ञानानुशीलन करें।

अकादमी के ये पिछले १० वर्ष प्रांत में वैचारिक व चैतन्तिक क्षेत्र में परम्परा व प्रयोग की दृष्टि से अपना बौद्धिक परिवार विस्तृत करने में पूर्ण गत्यात्मक रहे हैं। पर्याप्त संख्या में पठित निबन्धों, संदर्भ सामग्री जन्य विशिष्ट, विवरणों एवं प्रचार-प्रसार एवं प्रकाशनों का समीचीन विवेचन तुलना व तारतम्य की दृष्टि से अकादमी ने राज्य में अनेक संगोष्ठियाँ एवं उपनिषद् किए हैं। अकादमी द्वारा अद्यावधि स्वतन्त्र अथवा संस्थाओं द्वारा सह-संयोजित लगभग ४० विचार गोष्ठियाँ की जा चुकी हैं। यदि कभी इस दिशा में किसी ने कोई शोध व समीक्षा का कार्य हाथ में लिया, तो राजस्थान के साहित्यकारों एवं विचारकों के सम्मुख उपलब्धि, प्रयोग सिद्धि, व्यापक प्रभाव (विचार चिन्तन व सृजन के क्षेत्र में) एक नये क्षितिज के आयाम सामने आयेंगे।

आज राजस्थान से बाहर के साहित्यिक क्षेत्रों में सम्मिलित हुए अनेक साहित्यकारों व चिन्तकों के मन पर यह छाप अंकित है कि जहां एक ओर राजस्थान का परम्परागत समृद्ध साहित्य और उसके कार्य में जुटे सर्जक व शोधक नये मान मूल्यों को अपनाते हुए प्राचीन साहित्य व संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी के उदीयमान रचनाकारों की विचारधारा

कही कुण्ठाग्रस्त नही है और न उनका चिन्तन ही जर्जीभूत है। इस प्रकार दोनो पीढ़ियां अबाध गति से अपने सृजन-कर्म में रत हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व और पश्चात् राजस्थान का साहित्यकार एकतंत्रराज की लम्बी रूढ़िवादी व्यवस्था से मुक्त होकर स्वतंत्रता के २० वर्षों के इस अर्द्ध दशक मे अपने चैतन्य और गौरव की रक्षा, वैचारिक प्रबुद्धता की संरक्षा व आत्मसमीक्षा के धरातल पर अपने को मुक्त पा रहा है, शेष बन्धनों से मुक्ति पाने को आज के युग की संक्रमणशील स्थितियों मे भी वह विवेक और भावना का सम्बोध सँजोये हुए है। (संलग्न तालिका देखें)

इन सभी संगोष्ठियों के अतिरिक्त अकादमी ने अपनी सम्बद्ध संस्थाओ मे अनेक उपलब्धिमूलक उपनिषद् एव सेमीनार भी आयोजित करवाये है। इन उपनिषदों और सेमीनारो द्वारा चिन्तन के नये क्षितिज सामने आये है और राजस्थान के साहित्यकारो को एक कार्यकारी स्तर मिला है। अकादमी द्वारा आज तक हुए इस तरह के उपनिषद् एवं सेमीनार इस प्रकार है

अकादमी के आर्थिक सहयोग से आयोजित प्रांत के शैक्षणिक संस्थाओ के उपलब्धिमूलक उपनिषद्

क्रमांक	आयोजन तिथि	संस्थान	गोष्ठी विषय	मुख्यअतिथि	अकादमी सहायता
१	२७,२८,२९. ११–६९	उदयपुर विश्व-विद्यालय उदयपुर	साहित्यिक शोध रूप क्षेत्र पद्धति और समस्याये संयोजक— डा० रामगोपाल शर्मा दिनेश	डा० नगेन्द्र	१००० रु.
२	१८,१९, १२–६९	अन्तर्भारती साहित्य	आधुनिक हिन्दी	अज्ञेय	५०० रु.

विचार-विमर्श के स्तर पर जो
शन भी हो चुका है।

उद्घाटनकर्त्ता	सचालक
ी भवानी प्रसाद मिश्र	डॉ० अचल
, अज्ञेय	श्री अज्ञेय
, काका कालेलकर	डॉ० (स्व०) रांगेयराघव
, जनार्दनराय नागर	श्री मेघराज मुकुल
ा० शिवमंगलसिंह सुमन	डॉ० मथुरालाल शर्मा
,, कालूलाल श्रीमाली	,, प्रभाकर माचवे
, नामवरसिंह	,, नामवरसिंह

		एव कला परिषद् अजमेर	उपन्यास साहित्य की सामाजिक पृष्ठभूमि तथा दृष्टिकोण संयोजक— डा० रामगोपाल गोयल		
३	२५,२६,२७ –२–६७	जोधपुर विश्व-विद्यालय जोधपुर	आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास मे महाकवि "निराला" का योगदान संयोजक— डा० रामप्रसाद दाधीच	आचार्य नददुलारे वाजपेयी	१००० रु

४ साहित्यिक व सांस्कृतिक विचार गोष्ठी कार्यक्रमों के लिये विशेष सहायता स्वरूप प्रिंसिपल सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर को ६६-६७ के सत्र मे प्रदान किये गये। ५०० रु

साहित्यकार व बंधुत्व उदय-वेला

साहित्यकार बंधुत्व राजस्थान साहित्य अकादमी की अन्तर्भारतीय साहित्यिक एकता, सहकारिता एवं वैचारिक भावना के प्रसार की एक महत्त्वपूर्ण योजना है। दिनांक २० । १ ६८ का दिन इस योजना के मांगलिक उदय की स्मृति तिथि है। अकादमी से सम्बद्ध नगर की प्रबुद्ध साहित्यिक संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के प्रांगण में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिन पहली बार भीलों की परम स्मरणीय एवं नैसर्गिक सौंदर्य में अभिमंडित

और राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के मध्य पारस्परिक विकास तथा प्रगति के लिए काम करता हुआ यह 'बन्धुत्व' भारतीय लेखकों के सहकार एवं सहयोग को उत्पन्न कर उसका विस्तार करने का व्रत ले। बन्धुत्व हेल-मेल और आदान प्रदान के कार्यक्रमों द्वारा भारतीय राष्ट्र की अन्तर्निहित एकता तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का कार्य 'बन्धुत्व' का मूलभूत लक्ष्य होगा। 'बन्धुत्व' यह मानता है कि भारतीय राष्ट्र की एकता तथा उसकी राष्ट्रीय चेतना भारतीय साहित्यकारों की मनसा और सर्जन के द्वारा सम्भव है। भारतीय इतिहास की परम्परा भी यही रही है कि सन्त, दृष्टा, क्रान्तिकारी तथा धर्म-संस्थापकों ने आधारभूत राष्ट्रीयता एकता में उसके विविध सांस्कृतिक सौन्दर्य और शौर्य द्वारा अवगाहन किया है। भाषाओं और बोलियों की विभिन्नता, प्रथाओं तथा परम्परा की बहुलता रहते हुए भी भारतीय जाति की बद्धमूल एवं आध्यात्मिक चैतन्य में परिपूर्ण एकता का स्वप्नदृष्टा और स्वप्नसेविओं ने सदैव अक्षुण्ण और निरन्तर बनाए रखने का प्रयास अपने त्याग, तपस्या और साधना द्वारा किया है।

बन्धुत्व की दीप-शिखा गुजरात के प्रांगण में

२६, २७ दिसम्बर सन १९६४ निःसन्देह गुजर-राजस्थान साहित्यकार बन्धुत्व समारोह के मधुमती भूमिका के रूप में दाना प्रसंगों की साहित्यिक स्मृति में सदैव अक्षुण्ण निधि बना रहेगा। साहित्यकार बन्धुत्व की प्रगति यात्रा सौराष्ट्र साहित्य सगम के स्वाध्दि समारोह के अवसर पर सम्पन्न हुई।

इस समारोह में सौराष्ट्र, गुजरात एवं कच्छ के २०० से अधिक साहित्यकारों के बीच राजस्थान के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व प० जनार्दनराय नागर ने किया। मण्डल के अन्य साथी सदस्यों में श्री शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश' श्री मगन मकमता (साहित्य मन्त्रि), श्री रमेशचन्द्र जैन 'भावक' (महामन्त्री

अन्तर्प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद जोधपुर), श्री हीरालाल सुखलाल, श्री प्रभात मेहता एवं श्री मारवाड़िया थे। समारोह का शुभारंभ श्री [illegible] के सुरीले गीत से हुआ। गुजरात व राजस्थान की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता पर दोनों प्रदेशों के बन्धुत्व को [illegible] करने के प्रयासों पर श्री गुलाबदास ब्रोकर, श्री ढोलरराय मांकड, कलागुरु पद्मश्री रविशंकर रावल, श्री के. का. शास्त्री व श्री पुष्करचन्द्र नागर ने राजस्थान के साहित्यकारों की साहित्यकार बन्धुत्व भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर आयोजित गुर्जर-राजस्थानी संस्कृति, साहित्य एवं कला-प्रदर्शनी का उद्घाटन व पुरस्कार वितरण पं० जनार्दनराय नागर द्वारा सम्पन्न हुआ।

राजस्थान का सम्मान

२७ दिसम्बर १९६४. सांयकाल. राजकोट नगरपरिषद् भवन सर्वश्री नागर व ज्योतीन्द्र दवे के सम्मान का एक ऐतिहासिक समारोह।

प० जनार्दनराय नागर को गुजरात की साहित्य व संस्कृति-सेवी जनता ने 'सगम चन्द्रक' की उपाधि से अलकृत किया। यह राजस्थान का सम्मान था। नगर की ३० संस्थाओ के प्रतिनिधियो ने दोनो विद्वानो को पुष्पाहार अर्पित किये व नगर-परिषद् के मेयर श्री बचुभाई ने श्री दवे व नागर को सम्मान-पत्र भेंट किए। नागरिक स्वागत-समिति के अध्यक्ष श्री दुर्गाप्रसाद देसाई ने कहा

"श्री नागरजी ने गुजरात-राजस्थान की टूटती कडी को फिर से जोड दिया है। बन्धुत्व कार्यक्रम को कार्यान्वित करके उन्होने गुजरात-राजस्थान की ही नही, समस्त भारत की सेवा की है।"

इस अवसर पर गुजराती बधुओ के निर्दोष स्नेह से भावाभिभूत सगम चद्रक प० जनार्दनराय नागर ने अत्यन्त ममतामयी वाणी मे बन्धुत्व का वह उद्घोष किया

किया गया। उद्घाटनकर्ता गुजराती के प्रसिद्ध कहानीकार श्री चुन्नीलाल मडिया थे।

आयोजन की अध्यक्षता की थी राजस्थान साहित्य अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष प० जनार्दनराय नागर ने। इस अवसर पर राजस्थान की ओर से तीन लेखकों का एक सक्षिप्त प्रतिनिधि मडल भी उपस्थित था। इस समारोह के अवसर पर अलग से अतप्रान्तीय साहित्यकार बन्धुत्व की संचालन समिति की एक बैठक भी हुई। जिसमे साहित्यकार बन्धुत्व कार्यक्रम की भावी रूपरेखा पर विचार किया गया।

डा० रांगेय राघव स्मृति भाषणमाला :

तीन भाषण : एक स्मृति :

व्याख्याता — डा० देवराज उपाध्याय

राजस्थान साहित्य अकादमी सगम, उदयपुर द्वारा अत-प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् के तत्त्वावधान मे जोधपुर मे स्व० डॉ० रागेय राघव की स्मृति मे दिनाक ६ मार्च को एक व्याख्यान माला का आयोजन हुआ।

व्याख्यान माला का उद्घाटन समारोह श्री महेश अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय जोधपुर मे किया गया। डॉ० रागेय राघव के तैल चित्र का स्थापन किया गया। प्रथम भाषण की अध्यक्षता श्री सुधीन्द्रकुमार कुलसचिव जोधपुर विश्वविद्यालय ने की। श्री मगल सक्सेना ने विस्तार से स्व० डॉ० रांगेय राघव की प्रतिभा और जीवनी के मुख्य पक्षो का परिचय देते हुए उनकी स्मृति मे आयोजित व्याख्यान-समारोह के औचित्य का प्रतिपादन किया।

दूसरे व तीसरे व्याख्यान का आयोजन गाधी अध्ययन केन्द्र में किया गया और उनकी अध्यक्षता क्रमश प्रो० नरपतिचन्द्र सिघवी तथा श्री रामनिवास मिर्धा अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा ने की। तीनो व्याख्यानो मे जोधपुर के साहित्य-कर्मियो, साहित्य-

प्रमिया, छात्रा व छात्राओं के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक भी उपस्थित रहे। जिनमे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० रमाल, रीडर डॉ०, नित्यानद शर्मा, प्रो० गणपतचन्द्र भण्डारी, श्री दुगड, डॉ० दाधीच, डॉ० रामसिंह तथा श्री आनद स्वरूप के नाम विशेष उल्लेखनीय है। समापन समारोह श्री रामनिवास मिर्धा के व्याख्यान से सम्पन्न हुआ।

डा० भैरवराज उपाध्याय ने अपने तीनो व्याख्यानों म डा० रागय राघव के उपन्यासो को समझने वाली एक मौलिक दृष्टि दी। अपने प्रथम व्याख्यान मे उन्होंने डॉ० राघव के उपन्यास साहित्य को सैद्धान्तिक दृष्टि से देखा। दूसरे व्याख्यान म उनका रचनात्मक विवेचन किया तथा तीसरे व्याख्यान म उसका मनोवैज्ञानिक मूल्य प्रस्तुत किया।

श्री मिर्धा ने अकादमी की इस प्रवृत्ति का नितान्त नवीन तथा शुभ कहा तथा नई पीढ़ी की महान प्रतिभाओ के मूल्यांकन के ऐसे आयोजनो को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बतलाया और आशा व्यक्त की कि अकादमी भविष्य म भी ऐसे आयोजन करती रहेगी।

कवि-सम्मेलन व गोष्ठियाँ

राजस्थान साहित्य अकादमी अपने साहित्यिक समारोहो के अवसर पर समय समय पर प्रान्त के भिन्न भिन्न क्षेत्रों की काव्य प्रतिभाओ को मच प्रदान करने व प्रबुद्ध श्रोतावर्ग के मनोरजन हेतु कवि-सम्मेलनो व काव्य गोष्ठियो का आयोजन करती रही है।

[illegible] म आयोजित सस्थाओ व [illegible] प्रयास। आग आयोजित विशिष्ट काव्य समारोहो के लिए अकादमी [illegible] [illegible] आदि [illegible] प्रदान [illegible] म [illegible] की है।

अकादमी के विभिन्न साहित्यिक आयोजनों में भाग लेने वाले देश-विदेश के साहित्यकारों की नामावली

१ भारत रत्न डॉ० राधाकृष्णन्
२ डॉ० कैलाशनाथ काटजू
३ डॉ० सम्पूर्णानन्द
४ श्री जैनेन्द्र कुमार
५ ,, काका कालेलकर
६ ,, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय
७ ,, सेठ गोविन्ददास
८ ,, डॉ० भोलाशंकर व्यास
९ ,, भारतभूषण अग्रवाल
१० ,, डॉ० रामविलास शर्मा
११ ,, माणकचन्द भट्टाचार्य
११ ,, हुमायूँ कबीर
१३ ,, स० ही० वात्स्यायन अज्ञेय
१४ डॉ० गुरुमुख निहालसिंह
१५ श्री देवेन्द्र सत्यार्थी
१६ ,, नरेन्द्र दवे
१७ ,, उपेन्द्र पण्ड्या
१८ ,, हँसमुख रावल
१९ ,, प्रो० हेसित बुच
२० ,, स्नेह रश्मि
२१ ,, हरिकृष्ण 'प्रेमी'
२२ ,, रघुवीर शरण 'मित्र'
२३ ,, बेधड़क बनारसी
२४ ,, पोद्दार रामावतार शर्मा 'अरुण'
२५ ,, श्यामू सन्यासी
२६ ,, बालकृष्ण सम (नेपाल साहित्य अकादमी)
२७ ,, चन्द्रमोहन मासकी ,,

५६ श्री 'सरवर' तौसवी
५७ ,, फुरकत काकोरवी
५८ ,, मैकश अकवराबादी
५९ ,, प० सुन्दरलाल
६० ,, 'रविश' सिद्दीकी
६१ ,, 'हिलाल' रामपुरी
६२ ,, 'अंजुम' सहारनपुरी

उक्त सभी साहित्यकारो ने अकादमी द्वारा आयोजित विभिन्न समारोहो एव अकादमी के प्रवृत्तिमूलक कार्यक्रमों मे समय-समय पर भाग लिया है। साहित्यकार वंधुत्व एव भावनात्मक एकता के ये सभी साहित्यकार प्रतिनिधि स्तंभ रहे हैं।

●

खण्ड-चार

साहित्यकार-सहायता

साहित्यकारो की आर्थिक सहायता
भावना और लक्ष्य

राजस्थान साहित्य अकादमी प्रान्त के साहित्यकारो को राज्य व केन्द्रीय सरकार की ओर से मिलने वाले अनुदान से सरक्षित, सक्रिय व केन्द्रीय वृत्ति के रूप मे हर सा मे वृत्तिया प्रदान करती है। इस सहायता की मूल भावना दान-प्रतिदान की न हो कर साहित्यकारो के साथ सहयोग सहकार ही रही है।

आज का लेखक एव साहित्यकार पर्याप्त अथाभाव से आक्रात है। राज्य भी अपनी सीमाओ म ही उनकी सहायता कर पाता है। अत श्रमजीवी लेखक सक्रिय अथ-सरक्षण के बिना अर्थाभाव से उत्पन्न परिस्थितिया से जूझता है।

साहित्य अकादमी प्रात की शीपस्थ स्वायत्त सस्था होने के नाते अपनी आर्थिक सीमाओ म आबद्ध रह कर भी श्रमजीवी साहित्यकारो को आशिक ही सही आर्थिक सहयोग प्रदान करने की दिशा मे सदव सचेष्ट व चिन्तित रहती आई है। वयोवृद्ध, रुग्ण, सकटापन्न एव स्वतन्त्र साहित्य-सजको को दी जाने वाली आर्थिक सहायताओ का ध्येय उनके सजन को गतिमय रखना, उन्हे चिन्ता मुक्त रखते हुए प्रात की साहित्यिक प्रगति व परम्परा को अक्षुण्ण रखना भी है। अकादमी को इस दिशा मे देश भर मे इस तरह की पहल करने का जो श्रेय प्राप्त है उसे अकादमी की सक्रिय गतिविधियो का सशक्त आधार माना जा सकता है। अकादमी द्वारा राज्य के साहित्यकारा का दी गई सक्रिय, साहित्य वेला वृत्ति की तथ्यमूलक तालिका आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

(कृपया सलग्न तालिका देखें)

इस तरह अकादमी ने राज्य के साहित्यकारो को आज तक सक्रिय सरक्षित और केन्द्रीय तीनो प्रकार की वृत्तियां दी है। इनके अतिरिक्त भी अकादमी सकटापन्न एवं रुग्ण साहित्यकारो को एक मुश्त राशि सहायतार्थ भी भेजती है।

अकादमी की वृत्तियो का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

अकादमी वृत्तियाँ

सक्रिय वृत्ति, साहित्य वेत्तावृत्ति, सरक्षित वृत्ति, केन्द्रीय वृत्ति, चिकित्सार्थ-एक मुश्त सहायता

ये चार प्रकार की वृत्तियाँ अकादमी प्रदान करती है। केन्द्रीय सरकार से जो वृत्तियाँ स्वीकृत होती है उसकी दो तिहाई राशि केन्द्र से मिलती है तथा एक तिहाई अकादमी व्यय करती है। केन्द्र से अब तक कई साहित्यकारो को वृत्तियाँ मिली, तदर्थ हम केन्द्रीय सरकार के कृतज्ञ हैं एव धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

इस प्रकार सत्र ६६-६७ तक दी गई सभी वृत्तियो की जानकारी यहाँ प्रस्तुत है।

सत्र ६७-६८ का विवरण आगे दिया जायेगा।

सत्र ६६-६७ मे दी गई वृत्तियाँ

१.	सक्रिय साहित्य वेत्ता वृत्ति	३८	४४९००-००
२.	सरक्षित ,, ,, ,,	१७	५०२८३-६२
३	केन्द्रीय ,, ,, ,, (सत्र ६६-६७ मे दो तिहाई भाग राज्य सरकार से प्राप्त)	७	४८३३-३५
४	चिकित्सार्थ व दिवगत साहित्यिको के परिवार हेतु तथा एक मुश्त विशेष सहायता	२१	१५२००-००
			११५२१६-९७

वत्तियो के इस उक्त विवरण को देख कर सहज ही बडा सकोच होता है कि सजनकर्मी साहित्यकारा का य वृत्तियाँ कितनी कम हैं परन्तु हमारी सीमित शक्तियाँ हैं। सरकार आर्थिक अनुदान में ज्या-ज्यो वद्धि करेगी, त्यो-त्यो हम वत्तियो में भी अपेक्षाकृत वद्धि कर सकेंगे और तब हम अपने साहित्यकारा के परिवारो को और अधिक राहत दे सकेंगे। अकादमी अनुदान को बढाने के लिए हमने अनेक बार सरकार को प्रतिनिधित्व किया है और सरकार ने इस ओर अकादमी अनुदान में वृद्धि करने के लिए निश्चय ही साच रही है, ऐसी हमारी मान्यता है।

६४-६५	६५-६६	६६-६७	६७-६८	जिसको कितना दिया गया
रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
—	—	—	—	४२००-००
—	—	—	—	५३२५-००
—	—	—	—	२५५०-००
६००	—	—	—	३७५०-००
१२००	९००	—	—	६९००-००
—	—	—	—	४७५८-६२
—	—	—	—	२४००-००
९००	९००	९००	—	५७००-००
६००	६००	९००	—	२७००-००
९६०	९६०	९६०	—	२८८०-००
७८०	—	-	—	७८०-००
-	९००	—	—	९००-००
—	६००	—	—	६००-००
—	७२०	७२०	—	१४४०-००
—	६००	९००	—	१५००-००
—	—	९००	—	९००-००
—	६००	२४००	—	३०००-००
५०८०	६७८०	७६८०	—	५०२८३-६२

खण्ड ५

अकादमी पुरस्कार

अकादमी की पुरस्कार योजना
प्रगति के चरण

राजस्थान साहित्य अकादमी ने प्रान्त के एव देश के मूध न्य साहित्यकारा एव नवोदित सजनरत प्रतिभाओ की प्रकाशित व अप्रकाशित कृतिया एव पाण्डुलिपियो को प्राय प्रति वर्ष आमन्त्रित कर विद्वान् समीक्षको के विवेचन–निणयो के आधार पर पुरस्कृत कर देश प्रदेश की साहित्य-सर्जना, श्रम एव प्रतिभा की मानद प्रगति म एक विशिष्ट योगदान देने मे पहल की है। अकादमी के निधारित पुरस्कारा मे शैक्षणिक सस्थानो के स्तर से लेकर देश व प्रदेश के स्वनामचेता साहित्यकारा के विस्तृत परिवार तक इन पुरस्कारो को प्रसारित किया है। अकादमी को इस बात का हर्ष व गर्व है कि पुरस्कारो के आह्वान को राजस्थान एव बाहर के साहित्यकारा न अपनी कृतिया के प्रतिनिधित्व से इस योजना को सफल बनाने मे अपना उदात्त एव उन्मुख सहयोग दिया है। साहित्य की विभिन्न विधाओ मे विस्तार प्राप्त करती हुई अकादमी की यह पुरस्कार योजना शास्त्रीय परम्परा से लेकर साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तिमूलक कृतियो को प्रश्रय देती है, वह इसकी सफलता का सशक्त प्रमाण है। राजस्थानी, हिन्दी, सस्कृत एव उर्दू इन चार भाषाओ मे रचे गये साहित्य का इस पुरस्कार योजना की प्रतियोगिता से जो प्रेरणा, प्रोत्साहन एव गति प्राप्त हुई है, वह इस बात का सकेत है कि इसके भविष्य का पथ उज्ज्वल है।

स्फुट काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, आलोचना शोध–अन्वेषण, दर्शन, इतिहास, कथा एव ललित गम्भीर निबन्ध तथा सस्मरण आदि विधाओ को "अकादमी पुरस्कार" के परिवेश म

प्रदेश स्तर पर लगभग २० कृतियां अब तक पुरस्कारों से समादृत हो चुकी है।

अखिल भारतीय मीरां पुरस्कार

अखिल भारतीय स्तर पर उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों पर दिया जाने वाला मीरां पुरस्कार अकादमी की पुरस्कार-योजना की प्रगति का दूसरा सशक्त चरण है। मीरां पुरस्कार से निबंध, आलोचना व काव्य-क्षेत्र में उत्तर-प्रदेश, बिहार एवं राजस्थान के चार महाकाव्यकार समादृत हो चुके है। मीरां पुरस्कार केवल हिंदी भाषा की विभिन्न विधाओं पर प्रदान किया जाता है। अब तक निबंध, आलोचना एवं काव्य विषयक ४ ग्रन्थों पर यह पुरस्कार दिया जा चुका है। यह पुरस्कार अखिल भारतीय स्तर का है। अकादमी जहां एक ओर राजस्थान के लेखकों की कृतियों का सम्मान करती है वहां दूसरी ओर वह अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कार आयोजित कर देश के साहित्यकारों के भावनात्मक एकता के पक्ष को सुदृढ़ करती है। इससे अकादमी देश की अन्य अकादमियों की क्षमता में अपने इस सशक्त प्रयास द्वारा अधिक सक्षम हो गई है। यह योजना "मीरां पुरस्कार" के नाम से जानी जाती है तथा अखिल भारतीय लेखकों को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधती है। यह पुरस्कार २०००) रु० का दिया जाता है तथा इसमें अकादमी द्वारा निर्धारित विधा पर प्रतिवर्ष कृतियां आमन्त्रित की जाती है।

अकादमी तथा मीरां पुरस्कार-योजना में अबतक जो ग्रंथ पुरस्कृत हुए है, उनकी सूची अग्रांकित है:

(कृपया संलग्न तालिका देखें)

पुस्तक का नाम	राशि
य सस्कृति क प्रतीक	२००० रु०
रस मीमासा	१००० रु०
	१००० रु०
वरा	१००० रु०

सृजन तीर्थ

मनीषी सम्पन्न की उज्जवल परम्परा

"सरस्वती व सच्चे उपासकों की वाणी एव लेखनी समस्त मानव जाति वे लाभ एव कल्याण के लिए होती है। राजस्थान के युवा साहित्यकार साहित्य अकादमी द्वारा उपलब्ध सुविधाओं से लाभ उठाकर जनपयोगी साहित्य का सजन करेगें, ऐसी मेरी आशामयी मान्यता है"

डॉ० सम्पूर्णानन्द
(मनीषी समावतन समारोह मे)

"राजस्थान के इतिहास मे अनेक ऐसे प्रसग, ऐसी स्मृतियाँ अभी अछूती पडी हैं, जिन पर हमारे आज के राजस्थान के साहित्यकार साहित्य सजन कर सकते हैं"

मुनि श्री जिनविजय
(मनीषी समावतन समारोह मे)

"राजस्थान साहित्य अकादमी की सफलता की कामना करता हूँ। वह राजस्थान की साहित्यिक और सास्कृतिक विकास के माग पर आगे बढाए। साहित्यकारों को समाज की परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए साहित्य का सजन करना चाहिए, ताकि उसकी कलाकृति का लाभ जन जन तक पहुँच सके।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय
(मनीषी समावतन समारोह)

भारतीय लोक कला-मडल का भव्य रगमच राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से १९, २०, २१ नवम्बर १९६८ का मनीषी समावतन समारोह का त्रिदिवसीय अन्त प्रान्तीय साहित्य

सृजनतीर्थ। सयोजक . डा० 'दिनेश'। अध्यक्ष पद पर आसीन गुजरात के वयोवृद्ध प्रसिद्ध साहित्यकार श्री स्नेह रश्मि। उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश, और गुजरात के प्रख्यात साहित्यकारो मे क्रमश श्री भगवतशरण उपाध्याय, डा० शभुनाथ सिंह, श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' श्री भोलाशकर व्यास, श्री श्यामू सन्यासी, श्री नरेन्द्र दवे, श्री जीणाभाई देसाई, श्री रामकुमार चतुर्वेदी, डा० देवराज उपाध्याय डा० सरनाम सिह 'अरुण' प्रभृति विद्वानो की उपस्थिति व उदयपुर नगर के सभ्रान्त नागरिको, बुद्धिजीवियो, कलाकारो एव साहित्यिको का हर्षित समुदाय और अकादमी द्वारा आयोजित मनीषी समावर्त्तन समारोह।

राजस्थान की महान् साहित्यिक परम्परा सृजन, शोध-पुरातत्व, चिन्तन एव गतिमयता के ज्योतिर्धर तीन विद्वान् डॉ० सम्पूर्णानन्द मुनिश्री जिनविजय एवं श्री हरिभाऊ उपाध्याय को अकादमी के मनीषी सम्मान से विभूषित करने का भावग्राही, मनोरम-एतिहासिक कार्यक्रम। एक एक कर तीनो विद्वानो को रजत-प्रशस्ति-पत्र और शाल-समर्पण एक अध्याय का अभिलेख साहित्यकार सम्मान की प्राच्यार्वाचीन परम्परा का निर्वहन।

कलम और तलवार एव वीर और श्रृंगार का कीर्ति भोगी राजस्थान उसकी मिट्टी मे देश के तीन शब्द-सेवी धनी साहित्यकारो का यह सम्मान अकादमी की सर्वोच्च उपाधि से अकूलत होकर शाश्वत अक्षरायित हो गया।

हमारी श्रद्धा

देश मे भाषाओ को लेकर झगड़ने की परिस्थिति नहीं आए और हिमालय से लेकर सेतुबन्ध रामेश्वर तक अपना महान् देश एक और अखण्ड है ऐसी विष्णु पुराण मे वर्णित श्रद्धा अधिक सुदृढ़ बने, ऐसी परिस्थिति देश मे सदा के लिए बनाई जाय, ऐसी हम को अभिलाषा हो। ऐसा अपना सब का पुरुषार्थ हो।

जीणाभाई देसाई

खण्ड ६

अकादमी सत्र १९६७-६८

अकादमी सत्र ६७-६८

सत्र ६७ ६८ में अकादमी में जो जो काय हुए, वह श्री मगल सक्सेना, तत्कालीन सचिव की सेवाओ के परिणाम है। इस सत्र के सभी कार्यो की विस्तत जानकारी यहा आगे दी जारही है। इस सत्र के जुलाई माह मे सरकार ने निदेशक के रूप में मेरी (डा० हरीश) नियुक्ति की। मैंने ६७-६८ की ३१ जुलाई से ही काय-भार सभाला। अब तक पिछले चार वर्षो से यह स्थान रिक्त पड़ा था। मैं राज्य सरकार के शिक्षा विभाग में अब तक अपनी सेवाएँ देता रहा हूँ। प्रशासन सबधी सस्थान में सेवा करने का मेरा पहला मौका है।

सचिव का लम्बा अवकाश

निदेशक के रूप मेरे सेवा काय सभालने के कुछ ही दिन बाद मेरे पूव अधिकारी सचिव श्री मगल सक्सेना ने लम्बा अवकाश ले लिया। जाने क्यो उन्होंने अकादमी की सेवाओ से मुक्ति पानी चाही। इसे मे अपना दुर्भाग्य ही मानता हूँ कि निदशक के रूप म कायभार सभालने मे मुझे जो उनसे आवश्यकरूप से सहयोग मिलना चाहिए था वह उनके लम्बे अवकाश के कारण मैं प्राप्त नही कर सका। अत श्री मगल ने इस सत्र मे जो काय प्रारभ किए उनकी पूर्ति के प्रयास म जुट जाना ही मैंने अपना कत्तव्य समझा और धीरे धीरे उनमे से कई काय समाप्त किए। उनका परिचय आगे दिया जा रहा है। इन सभी कार्यो म सहायक सचिव ने मुझे सहायता की है। श्री मगल के त्याग पत्र से कार्यो मे थोडा व्यवधान अवश्य आया, पर अब स्थितियाँ काफी सभल गई है, ऐसा मैं मानता हूँ। मुझे श्री मगल के, अकादमी की सेवाओ मे रहते हुए, त्याग पत्र का प्रकाशित कराकर राज्य भर के साहित्यकारो

को प्रेषित करने के कारण साहित्यकारों में व्याप्त कुछ असंतोष का भी सामना करना पड़ा। उनके अवकाश पर हो जाने से कई कार्यों में पर्याप्त कठिनाइयाँ अनुभव हुई, पर अब स्थितियाँ सामान्य हैं और मुझे विश्वास है कि कार्य पुनः अपनी स्वाभाविक एवं संतोष-जनक गति में होंगे।

अकादमी और राज्य-सरकार

साहित्य अकादमी की स्थापना राज्य-सरकार के मुख्यमंत्री माननीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया के अनुग्रह से जनवरी सन् १९५८ में हुई। पिछले १० वर्षों में राज्य-सरकार ने अनुदान की राशि डेढ़ लाख रुपया ही रखी है। पिछले वर्षों में आज अकादमी का कार्य-परिवार अत्यन्त विस्तृत हो गया है। राज्य की अनेक संस्थाओं से सम्बन्धता, साहित्य का प्रचार-प्रसार, प्रकाशन कार्य, मधुमती मासिक, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा राजस्थानी के साहित्य की अभिवृद्धि, अन्तर्प्रान्तीय बंधुत्व, अकादमी पुरस्कार, सेमीनार सिम्पोजियम तथा प्रान्त के लेखकों को भावनात्मक एकता के सूत्र में बाँधना आदि सभी प्रवृत्तियों के विकास में अकादमी ने भगीरथ प्रयत्न किये हैं। श्री जनार्दनराय नागर के नेतृत्व में अकादमी अपनी शैशवावस्था पार कर चुकी थी। उन्होंने अपने हाथों अकादमी को सँजोया-सँवारा है। उनके कार्यकाल में डा० मोतीलाल मेनारिया तथा डा० सोमनाथ गुप्त के निर्देशन ने अकादमी के विकास को अहर्निश गतिवान बनाया। श्री नागर ने अकादमी को प्रजातांत्रिक स्वरूप पर विकसित कर स्वायत्त बनाने के भगीरथ प्रयत्न किए हैं जो अकादमी-इतिहास के कई पन्ने घेरते हैं। अतः अब राज्य-सरकार से अकादमी की सरस्वती सभा तथा गवर्निंग बोर्ड बराबर निवेदन कर रहा है कि अकादमी का वार्षिक अनुदान ३ लाख से ५ लाख तक कर दिया जाय। यदि मुख्यमंत्री जी का अनुग्रह हुआ तो मुझे विश्वास है कि अकादमी के अनुदान में निश्चय ही संतोषजनक वृद्धि होगी। मेरी सुदृढ़ मान्यता है कि देश के प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक, राष्ट्रसेवी, साहित्यकार श्रद्धेय

१८ राजा-राणी " बृजमोहन जावलिया
१९ परिप्रेक्ष्य डा० रणजीत
२० राजस्थानी बाल-साहित्य डा० पूनम दईया

उक्त कृतियों में से सत्र ६७-६८ में निम्नांकित कृतियां छप कर आई हैं—

१ सांझ उतरी श्री श्री ज्ञान भारिल्ल
२ कविताएं " रमेश कुमार गौग
३ फूलों से घिरा केन्द्रम " मनोहर वर्मा
४ गीतों का क्षण " अकिंचन शर्मा
५ कांपती सिन्दूर रेखाएं " शचीन्द्र उपाध्याय
६ ये बदरंग क्षण " यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
७ एक मरण धर्मा और अन्य " ऋतुराज

उक्त ७ कृतियों के अतिरिक्त शेष १३ कृतियां मुद्रणाधीन तथा शीघ्र प्रकाश्य है।

अकादमी की प्रवृत्तियों मे सम्बद्ध संस्थाओं को साहित्य प्रचार-प्रसार हेतु सहायता देना, पत्र-पत्रिकाओं को सहायता देना, साहित्यकारों को आर्थिक सहायता (वृत्तियां) प्रदान करना तथा पुरस्कार देना आदि है। हमारे सीमित अनुदान में जितना यथा-शक्त सभव हो सका, इस सत्र मे इन प्रवृत्तियों के लिए व्यय किया गया है। सत्र १९६७-६८की उक्त प्रवृत्तियों के लिए व्यय की गई राशि का विवरण अग्रांकित है.

६७-६८ सत्र के महत्त्वपूर्ण निर्णय

- साहित्यकारो को वृत्तिया
- सम्वद्ध सस्थाओ को अनुदान
- प्रान्त की साहित्यिक पत्रिकाओ को सहायता
- मनीषी सम्मान

राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम), उदयपुर द्वारा सत्र ६७-६८ के लिए प्रान्त के साहित्यकारो, अकादमी से सम्बद्ध

साहित्यिक सस्थाओ एव पत्रिकाओ को आर्थिक सहायता एव मनीषी सम्मान के अन्तर्गत निर्णय लिए गए है

(१) साहित्यकारो को वृत्तियाँ

नाम	स्थान	राशि
[क] सक्रिय साहित्य वेत्ता वृत्ति		
१–श्री कमर मेवाडी	कांकरोली	४००-००
२–श्री विश्वेश्वर शर्मा	उदयपुर	६००-००
३–श्री शचीन्द्र उपाध्याय	कोटा	६००-००
[ख] सरक्षित वृत्ति		
४–श्री चम्पालाल मजुल	भरतपुर	६०० ००
५–श्री पारसा चौधरी	जयपुर	६०० ००
६–श्री प्रकाशचद 'चाँद'	कोटा	६०० ००
७–राजकवि श्री हरनाथ	झालावाड	१२०० ००
[ग] सरक्षित एव केन्द्रीय वृत्ति		
८–श्री कमर वाहिदी	जयपुर	६३३-३३
९–श्री सैयद म हसन सौलत टोंकी (स्व०)	टोंक	६०० ००
१०–श्री सुमनेश जोशी	जयपुर	१२००-००
११–श्री मुरलीधर व्यास	बीकानेर	६०० ००
१२–श्री अर्शी अजमेरी	अजमेर	१२०० ००
१३–श्री प्रेमसुखी देवी (धर्म पत्नी स्व० गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद',	जयपुर	६०० ००
१४–श्री जगदीश प्रसाद 'दीपक'	जयपुर	६००-००
१५–श्रीमती चमेलीदेवी (स्व० श्री ललित गोस्वामी की मा)	जयपुर	६०० ००

क्रमांक ८,९,१० को पहले अकादमी की वृत्ति स्वीकार कर ली गई थी, किन्तु फरवरी, ६८ से केन्द्रीय वृत्ति स्वीकार हो जाने से केन्द्रीय वृत्ति तथा जनवरी, ६८ तक अकादमी की वृत्ति दी गई। बिन्दु ९ पर अंकित साहित्यकार का देहावसान हो जाने से वृत्ति नहीं दी जा सकी है।

क्रमांक १० पर अंकित साहित्यकार की वृत्ति केन्द्र ने स्वीकार कर ली है अत अकादमी की वृत्ति को रोक कर केन्द्रीय वृत्ति देनी पडी।

क्रमांक १३ को पूर्व मे ६००) रु० अकादमी की वृत्ति दे दी गई है अब फरवरी, ६८ से केन्द्रीय वृत्ति स्वीकृत की गई है अत गवर्निंग बोर्ड के निर्णयानुसार एडजस्ट करना है।

(२) सम्बद्ध संस्थाओं को अनुदान

सस्था	स्थान	राशि
१—हिन्दी विश्व भारती	बीकानेर	१२००-००
२—वागड प्रदेश साहित्य परिषद्	डूगरपुर	६००-००
३—अंतर्भारती साहित्य एव कला परिषद्	अजमेर	१२००-००
४—भारतीय विद्या मदिर शोध-सस्थान	बीकानेर	६००-००
५—अन्तर्प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद्	जोधपुर	१२००-००
६—भारतेन्दु समिति	कोटा	१२००-००
७—हिन्दी साहित्य समिति	भरतपुर	५००-००
८—राजस्थान साहित्य समिति	बिसाऊ	६००-००
९—राजस्थानी शोध-सस्थान	जोधपुर	१२००-००

(३) प्रान्त की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को आर्थिक सहायता

१–वाणी	बोरुंदा	१०० ००
२–मरुवाणी	जयपुर	६०० ००
३–वातायन	बीकानेर	६००-००
४–मरुभारती	पिलानी	६०० ००
५–वरदा	बिसाऊ	१००-००
६–लहर	अजमेर	६०० ००
७–वैज्ञानिक बालक	जयपुर	४०० ००
८–परम्परा	जोधपुर	६००-००
९–शोध पत्रिका	उदयपुर	६००-००
१०–राजस्थान भारती	बीकानेर	६०० ००
११–हाड़ोती-वाणी	कोटा	५००-००
१२–शाने हिन्द	दिल्ली	१००-००
१३–विश्वम्भरा	बीकानेर	६०० ००

उक्त पत्रिकाओं में से 'लहर अजमेर' ने ६०० रु० लेना अस्वीकृत कर यह सहायता लौटादी है।

हम ज्ञात हैं कि उक्त सहायता बहुत सामान्य सहायता है, पर समिति सामर्थ्य और अनुदान की सीमाओं में साहित्यिक बंधुत्व और साहित्य के प्रचार प्रसार हेतु यथासंभव जितना हो सकता है, उतना ही अकादमी कर सकती है।

मनीषी सम्मान से विभूषित किए जाने वाले साहित्यकार

सरस्वती सभा ने अकादमी दशाब्दि समारोह (द्वितीय चरण) में निम्नांकित 'मनीषी' उपाधि से अलंकृत करने का निर्णय किया है

१	श्री गङ्गाविन्द दास दास पी	मध्य प्रदेश
२	,, प० जनार्दनराय नागर	उदयपुर
३	,, प० विद्याधर शास्त्री	बीकानेर

उक्त तीनो विद्वानो मे से प्रथम मध्यप्रदेश और शेष दो विद्वान् राजस्थान के है । आगामी दशाब्दि समारोह मे इन्हे अकादमी की सर्वोच्च उपाधि "मनीषी" से अलकृत किया जा रहा है ।

अकादमी और केन्द्रीय वृत्ति

अकादमी की वृत्तियो के साथ-साथ हम भारत सरकार के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते है । जिसने अकादमी की केन्द्रीय वृत्तियाँ घोषित कर सहायता की है । केन्द्रीय सहायता के कारण ही अकादमी राज्य के कई साहित्यकारो की सेवाएँ कर सकी है । अन्यथा अकादमी के लिए यह शक्य नही था कि इतने साहित्यकारो को वृत्तियाँ दी जा सकती । हम पूर्ण आशावादी है कि केन्द्रीय सरकार भविष्य मे भी अकादमी पर इसी प्रकार अनुग्रह करती रहेगी ताकि अकादमी साहित्यकारो को सेवा कर सकने मे समर्थ हो सके । सत्र ६७–६८ मे जिन्हे केन्द्रीय वृत्ति मिली है उनकी जानकारी ऊपर दी जा चुकी है ।

राज्य-सरकार द्वारा पुस्तकों की खरीद

इस वर्ष राज्य सरकार ने अकादमी की पुस्तको के क्रय करने मे थोडी कृपणता दिखाई है और पिछले वर्ष की तुलना मे वहुत कम राशि की पुस्तके क्रय की गई है । अकादमी की कृतियाँ प्रात के साहित्यकारो की श्रेष्ठ कृतियाँ होती है फिर भी राज्य सरकार का शिक्षा विभाग उनकी मुक्त हस्त से खरीद नही कर पाता । हमने शिक्षा विभाग को तदर्थ अनुनय पत्र भेजे है और हमे विश्वास है कि सत्र ६८-६९ मे शिक्षा विभाग अधिकाधिक सख्या मे अकादमी की कृतियो की खरीद करेगा तथा अपना अधिकाधिक सहयोग हमे देगा ।

सत्र ६७-६८ मे राज्य सरकार के शिक्षा विभाग ने अकादमी की जितनी कृतिया खरीदी हैं, उनकी जानकारी अग्राकित हैं—

क्रमाक	पुस्तक का नाम	लेखक/ सपादक	प्रतियाँ मागी गई	प्रतियाँ भेजी गई	कमीशन के बाद प्राप्त राशि
१	नौनिहालो के गीत	डा हरीश	१ ८१	१३८१	
२	अद्भुत नगर	नाता गुप्ता	१६८१	८८१	
३	राजस्थान के नाटककार	स डा रामचरण महेन्द्र	३३७	३३७	
४	राजस्थान के कहानीकार	स यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र तथा डा रामचरण महेन्द्र	३३७	३३७	६६६ ८२
					कुल राशि—७०५३ ८२

उक्त कृतिया के विवरण के स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा विभाग ने ६७ ६८ मे कुल ७०५३-८१ की राशि की कृतिया खरीदी ह जो इससे पहले के सत्र की खरीद की चौथाई भी नही है। हम तदर्थ राज्य सरकार से निवेदन करते हैं कि शिक्षा विभाग इस ओर ध्यान देकर अकादमी के प्रकाशनो को अधिकाधिक क्रय करे। फिर भी उनकी अपनी सीमाओ मे जो कुछ शिक्षा विभाग ने क्रय किया है, तदर्थ हम सरकार (शिक्षा विभाग) का आभार प्रदर्शन करते हैं।

केन्द्रीय अनुवाद योजना

अकादमी ने केन्द्रीय सरकार द्वारा दी गई अनुवाद योजना के अतगत दो कृतियो के अनुवाद कार्य को पूरा किया है। ये कृतियाँ हैं (१) बृहत्तर भारत—जो अग्रेजी की श्री मजुमदार की कृति ग्रेटर इडिया का अनुवाद है। यह अनुवाद डा० सोमनाथ गुप्ता ने किया है। बृहत्तर भारत प्रेस द्वारा शीघ्र प्रकाश्य है।

दूसरी कृति है शार्ले कृत—'दि साइकाल्जी ऑव इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स' इसका अनुवाद उदयपुर विश्वविद्यालय के समाज-शास्त्र विभाग के दो विद्वान् प्रोफेसरों सर्वश्री कुन्दन भाटिया तथा डा० शभूलाल दोपी ने किया है। कृति का व्हेटिंग कार्य श्री मगल सक्सेना ने किया है। यह कृति भी प्रेस मे प्रेपित करने को प्रस्तुत है।

हम चाहते है कि केन्द्रीय सरकार से हम इस योजना के अन्तर्गत और कृतियाँ ले ताकि योजना के अतर्गत साहित्यकारो को और अधिक सेवा करने का अवसर मिल सके और हमारे केन्द्रीय सरकार से सम्वन्ध सुदृढ हो सके।

मधुमती बाल साहित्य विवेचन विशेषांक

(सत्र ६७--६८)

सत्र ६७-६८ की अकादमी की एक श्रेष्ठ उपलब्धि मधुमती का यह वाल साहित्य विवेचन विशेपाक है, जो अतिथि सम्पादक श्री मनोहर वर्मा के सपादन मे प्रकाशित किया गया है। यह अक देश भर के वाल साहित्य विवेचन के क्षेत्र मे पहला तथा अपने ही प्रकार का है। देश भर के वाल साहित्य विशेपज्ञो, ख्यातिलब्ध साहित्यकारो एव विद्वानो ने इस अक की शुभाशसाएँ की है, और हमारा विश्वास है कि यह विशेषाक अकादमी की सत्र ६७-६८ की उपलब्धियो मे एक जीवन्त उपलब्धि है। इस विशेषाक मे देश के लगभग सभी प्रान्तो के बाल साहित्य विशेपज्ञो के विवेचन है तथा इसे देश भर की वाल साहित्य के क्षेत्र मे अद्यावधि हुई प्रगति का एक सक्षिप्त इतिहास कहा जा सकता है।

सत्र ६७-६८ के अकादमी पुरस्कार

इस सत्र मे पुरस्कारो सम्वन्धी ज्ञातव्य इस प्रकार है·

१ **मीरॉं पुरस्कार—**

इस सत्र मे उपलब्ध कृतियो मे से किसी की कृति को इस योग्य नही माना गया। अत इस सत्र मे मीराँ पुरस्कार नही दिया गया।

२ प्रोत्साहन पुरस्कार—

इस सत्र मे इस पुरस्कार के नियमादि नहीं होने के कारण यह किसी को नहीं दिया जा सका।

३ श्रेष्ठ साहित्य पुरस्कार—

यह पुरस्कार भी विशिष्ट तकनीकी निर्णयो के अभाव म किसी को नहीं घोषित किया जा सका।

४ मेघाणी पुरस्कार—

सत्र ६७-६८ मे यह पुरस्कार गुजरात के वरिष्ठ साहित्यकार एव लोक साहित्य सेवी प्रो० पुष्कर चन्द्रवाकर को दिया जाना घोषित हुआ है। ११०० रु० का यह पुरस्कार दशाब्दि समारोह के द्वितीय चरण में दिनाक २६ मई, ६८ को श्री प्रो० वाकर को दिया जा रहा है। अगले सत्र ६८ ६६ मे यह पुरस्कार किसी दूसरे प्रदेश यथा—महाराष्ट्र, पजाब आदि के किसी वरिष्ठ साहित्यकार को दिया जायगा।

५ अकादमी पुरस्कार—

इस सत्र में ये पुरस्कार केवल तीन विधाओ राजस्थानी पद्य हिंदी मुक्तक काव्य तथा हिन्दी कथा पर घोषित किए गए, पर कुछ विचारणीय बातो पर पुनर्विचारार्थ, किए जाने तथा कुछ तकनीकी कारणो से श्री अध्यक्ष अकादमी ने इन्हे स्थगित कर दिया।

अकादमी द्वारा विभिन्न साहित्यकारो का सम्मान

पिछले वर्षो की भांति अकादमी ने सत्र ६७ ६८ म भी अपनी 'अ तप्रान्तीय बधुत्व" जसी प्रमुख प्रवृत्ति के अ तगत अग्राकित तीन विद्वानो क सम्मान म सम्मान गोष्ठिया आयोजित की

१ श्री देवेन्द्र सत्यार्थी (पजाब)

२ ,, बाबा कालेलकर (महाराष्ट्र)

३	,, सेठ गोविददास	मध्य प्रदेश
४	प्रो० पेत्चेन्को	प्राच्य विद्या एव इतिहास वेत्ता मास्को, (रूस)

इन विद्वानो ने अपने बहुमूल्य विचारो से हमे लाभान्वित किया। अर्थाभाव के कारण हम अकादमी की इस प्रवृत्ति का सुव्यवस्थित विकास कर पाने मे असमर्थ रहे है फिर भी हम इस ओर पूर्ण सक्रिय है।

अकादमी–दशाब्दि–समारोह
(प्रथम चरण)

अकादमी की स्थापना २८ जनवरी सन् १९५८ मे हुई और इस प्रकार उसने अपने जन्म से अब तक १० वर्षो की यात्रा पूरी की है। अकादमी की पिछली दस वर्षीय उपलब्धियो के लिए अकादमी ने दशाब्दि-समारोह का प्रथम चरण मार्च ६८ मे आयोजित किया। इसमे लगभग ७०००) रु०की राशि व्यय हुई इस समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों का सक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

दशाब्दि समारोह (प्रथम चरण) का उद्घाटन

दिनाक २२-३-६८ को सायकाल ५-३० बजे राजस्थान विद्यापीठ के सालेटिया मैदान मे दशाब्दि समारोह के प्रथम चरण का उद्घाटन हुआ। राजकवि श्री हरनाथजी द्वारा सरस्वती वदना के बाद सर्वप्रथम अकादमी के निदेशक डा० हरीश ने अकादमी की सभी प्रमुख प्रवृत्तियो का परिचय दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० नगेन्द्र ने समारोह की अध्यक्षता की तथा पं० जनार्दनराय नागर ने उद्घाटन भाषण दिया।

४	,,	डॉ० रामचरण महेन्द्र	कोटा
५.	,	नवलकिशोर	उदयपुर
६.	,,	घासीलाल पचोली	,,
७	,,	डॉ० रामगोपाल दिनेश	,,
८	श्रीमती	कान्ता मारवाह	अजमेर
९	श्री	अकिंचन् शर्मा	,,
१०	,,	डॉ० रणजीत	वनस्थली
११	,,	जगदीश वोरा	अजमेर
१२.	,	विजयकुल श्रेष्ठ	उदयपुर
१३.	,,	वृद्धिशकर शिल्पी	,,
१४	,,	लक्ष्मीलाल जोशी	जयपुर
१५.	,,	डॉ० देवीलाल पालीवाल	उदयपुर
१६	,,	हरिराम आचार्य	जयपुर
१७	,,	प्रेमशकर श्रीवास्तव	अजमेर
१८.	,,	डॉ० नगेन्द्र	दिल्ली

गोष्ठी के अत मे डॉ० नगेन्द्र का विस्तृत समाहार-भाषण हुआ।

तृतीय गोष्ठी

दिनाक २३ ३ ६८ को सायकाल ३.३० वजे डा० नगेन्द्र के सचालन मे तृतीय गोष्ठी आरभ हुई, जिसमे निम्नाकित विद्वानो के विशेप भाषण हुए—

१	श्री	हरिराम आचार्य	जयपुर
१	,,	डा० रणजीत	वनस्थली
३	,,	डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'	उदयपुर
५	,,	प्रो० भवरलाल समदानी	,,
६	,,	डा० चन्द्रशेखर भट्ट	,,

समापन

तृतीय गोष्ठी को समापन-समारोह मे परिवर्तित किया गया

दशाब्दि समारोह
(द्वितीय चरण)

अकादमी अपनी पिछली १० वर्षीय उपलब्धियो पर किए जाने वाले दशाब्दि समारोह का द्वितीय चरण मई सन् १९६८ मे आयोजित कर रही है। इस समारोह की तिथियाँ २८, २९, तथा ३० मई निश्चित हुई है। इस समारोह के प्रमुख आकर्षण अग्राकित है

१ मनीषी समावर्तन समारोह
२ अन्तर्प्रान्तीय वक्तृत्व समारोह (मेघाणी पुरस्कार)
३ विशिष्ठ साहित्यकार सम्मान समारोह (राज्य के ६ वरिष्ठ साहित्यकारो एव विद्वानो को)
४ अकादमी एक दशक का विमोचन
५. राजकवि हरनाथ ग्र थावली विमोचन समारोह
६ अकादमी की १० वर्षीय प्रगति प्रदर्शनी
७ साहित्य सगोष्ठी (अकादमी के तत्त्वावधान मे साहित्य सस्थान द्वारा आयोजित)

सरकार द्वारा अतिरिक्त अनुदान

दशाब्दि समारोह के लिए राज्य-सरकार ने ५,०००) रु० की राशि का अतिरिक्त अनुदान प्रदान किया है तदर्थ सरकार का हम कृतज्ञता-ज्ञापन करते है। अकादमी के इस पूरे समारोह मे कुल १५,०००) रु० की राशि व्यय करने पर विचार कर रही है।

अगले दशक के लिए कुछ योजनाएँ
अकादमी के निदेशकीय—स्वप्न

निदेशक के रूप मे नियुक्ति होने के बाद अकादमी के लिए

मेरी कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाए थी उन्हे गवर्निंग बोर्ड के सम्मान्य सदस्यो के पास प्रेषित किया गया है। मुझे ज्ञात नही, अकादमी इन योजनाओ को स्वीकृत करेगी या नही।

इन योजनाओ के पीछे मेरे स्वप्न यही थे कि इनको यदि अकादमी पूरा करे तो अकादमी के कार्य मे कुछ विशिष्ठ पन्ने जुड सकेंगे। यही नही, मेरा लक्ष्य यह भी था कि नागरी प्रचारिणी सभा काशी, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् पटना, हिन्दी साहित्य समिति उत्तर-प्रदेश, लखनऊ तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद आदि सस्थाओ की भाँति हमारी अकादमी भी कुछ ऐसे ग्रथो का प्रकाशन करे, जो विभिन्न विषयो के हो तथा अपने आप मे श्रेष्ठ कृतित्व लिए हो। ताकि कृतियो के माध्यम से हम अकादमी को उक्त सस्थाओ की भाति अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर सकें।

इन कृतिया के अतिरिक्त और भी कई योजनाओ का स्वरूप लेकर आया था। ये सभी योजनाएँ कुछ सुझावो सहित विधाओ के अनुसार यहाँ प्रस्तुत है—

योजनाए तथा सुझाव

१	कोश —	१ राजस्थानी साहित्य कोश (हिन्दी साहित्य कोश के आदर्श पर)
		२ भारतीय लोक वार्ता कोश विशेष सन्दर्भ राजस्थान
		३ पुरानी हिंदी (उत्तर अपभ्रश) का शब्द कोश
२	विशिष्ट ग्रथ	४ विभिन्न विषयो पर मूर्द्धन्य विद्वानो द्वारा उच्च स्तरीय साहित्य तथा

साहित्येतर विषयो पर लिखे ग्रंथ और उनका प्रकाशन
अ. राजस्थानी साहित्यकारों द्वारा
ब. देश के साहित्यकारो द्वारा
राजस्थान पर लिखे ।

३. प्रतिनिधि साहित्य सकलन — ५ (अ) प्रादेशिक साहित्यकारो के
(ब) विश्व के साहित्यकारो के

४. लोक-साहित्य — ६. राजस्थानी लोक गीत · वृहत संकलन
७ राजस्थान के लोक प्रबध और उनका सम्पादन--प्रकाशन

५. व्याकरण — ८ राजस्थानी का प्रामाणिक व्याकरण

अनुवाद

(अ) अंग्रेजी — ९. पार्लो प्रोपर नेम्स (इस अन्तर्राष्ट्रीय कृति का हिन्दी अनुवाद)
१० दी गोलुन बाऊ · फ्रेजर (हिन्दी अनुवाद)
११ विदेशी लेखकों की विभिन्न कृतियो के हिन्दी रूपान्तर हो ।

(ब) संस्कृत — १२ राजस्थान के सस्कृत के महान कवियो के हिन्दी रूपान्तर उदारहणार्थ (माघ जैसे कवि)

(स) शोध — १३. सस्कृत के सुभाषित (ऋग्वेद से आज तक)
१४ राजस्थान के संस्कृत कवि और उनका कृतित्व
[१] वैदिक संस्कृत से अपभ्रंश काल तक
[२] अपभ्रंश काल से आज तक
१५ अपभ्रंश साहित्य का इतिहास

(द) ग्रंथावलियाँ
१६. आचार्य कुलपति मिश्र और उनकी ग्रंथावली
१७ आचार्य सूरत मिश्र और उनकी ग्रंथावली

१८ श्री गोरीशकर हीराचद ओझा ग्रथावली

१९ श्री गिरधर शर्मा नवरत्न ग्रथावली

२० कवि सुधीन्द्र ग्रथावली

२१ श्री जनार्दनराय नागर ग्रथावली

मधुमती तथा नखलिस्तान

१ मधुमती अकादमी की केवल सृजनात्मक विधाओं की ही पत्रिका हो।

२ मधुमती की साइज और रूप सज्जा मे अभीष्ट परिवर्तन हो।

३ मधुमती का एक पूरा अलग विभाग हो, उसका पूरा स्टाफ हो, ताकि पत्रिका अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

४ नखलिस्तान की ५०० प्रतिया देवनागरी लिपि मे छपें।

५ शोध, संस्कृति तथा प्राच्य विद्या एव इडोलाजी मे सम्बद्ध अकादमी 'गवेषणा" या मूल्याकन नाम से किसी त्रैमासिक का प्रकाशन करे।

७ अकादमी-प्रेस अकादमी-भवन

अकादमी के अपने निजी प्रेस तथा भवन हो, ताकि अकादमी के सभी प्रकाशन सुविधानुसार हो सकें। अकादमी का निजी भवन भी पहली आवश्यकता है अभी हमारे पास स्थान की बहुत कमी है तथा अकादमी के वर्तमान भवन मे अनेक असुविधाएँ हैं। भवन के साथ ही अकादमी के लिए प्रेस की स्थापना को मैं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य मानता हूँ। भवन तथा प्रेस दोनों के लिए राज्य सरकार से ऋण की सरलता से व्यवस्था हो सकती है।

८. अकादमी के लिए अर्थ संग्रह

इसके लिए निम्नांकित स्रोत बनाये जासकते है :

१. प्रवासी तथा राजस्थान के धनपतियों से अनुदान

२ प्रादेशिक राज्य सरकारों से योजनाओ पर लिया धन।

३. विदेशो से योजनाओ पर आर्थिक सहायता।

४ केन्द्रीय सरकार तथा यू० जी० सी० से अर्थ अनुदान।

५. अर्थदाताओ के नाम से विभिन्न ग्रथमालाओं का प्रकाशन।

९. अकादमी के वृत्ति-प्राप्त साहित्यकार

अकादमी जिन साहित्यकारो को वृत्ति या आर्थिक सहायता प्रदान करती है उन साहित्यकारो की श्रेष्ठ कृतियो के प्रकाशन की समुचित व्यवस्था हो, ताकि उनकी सर्जन-चेतना साकार हो सके और वे स्वय को निष्क्रिय अनुभव न करे।

१०. अकादमी व्याख्यानमाला

अकादमी में विभिन्न आसनो की स्थापना हो तथा उन आसनों पर देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों के व्याख्यान हो तथा ऐसे व्याख्यानो को अकादमी पुस्तक रूप मे प्रकाशित करे।

उक्त सभी योजनाएँ उनसे सम्बद्ध कुछ सुझाव मेरे स्वप्न है। इन योजनाओ की पूर्ति यदि अगले दशक मे होसकी, तो इन स्वप्नो को कार्य रूप मे परिणित किया जासकता है। एतदर्थ पूर्ण आशावादी होकर इन योजनाओ की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील हूँ। भविष्य मे शायद ये सार्थक हो जाये। पर एतदर्थ केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार तथा अर्थदाताओ द्वारा दिए गए अनुदान पर ही निर्भर है। प्रभु करे, अकादमी की आर्थिक स्थिति सुदृढ हो और हमारे सकल्पो को सिद्धि मिले।

०